अयोध्या

दिग्दर्शन

* अयोध्या गाइड *

लेखकः—

श्री रामरक्षा त्रिपाठी 'निर्भीक'

एम० ए० ए० टी० सी० शास्त्री साहित्यरत्न

प्रकाशकः—

रामलखन गुप्त बुकसेलर, श्री अयोध्याजी

तृतीय संस्करण २०००]   चैतरामनौमी   [मूल्य दो रुपया

सन् १९७०

निवेदन

अयोध्या–दिग्दर्शन के प्रथम प्रकाशन की प्रतियां दूर देश
व्यक्तियोंने पढ़ा। कुछ विदेशी पर्यटकों तथा अनुसन्धान कर्ताओं
ने इससे लाभ उठाकर इसके आधुनिकतम प्रकाशन के लिए मुझे
लिखा भी। अतः पुनः प्रकाशन आप महानुभावोंके समक्ष प्रस्तुत
है। मैं इस आवृत्तिके लिए धार्मिक रामायण पुस्तक भण्डार
कार्यालय के अध्यक्ष श्रीरामलखन गुप्ता का आभारी हूं क्योंकि
उन्होंने हमसे यह पुनीत परिश्रम करवाही लिया।

मुझे इस बातका खेद है कि मेरी अभिलाषानुकूल उत्तम
व्यवस्था समयाभाव से न हो सकी, जिससे कुछ विषय बहुत
संक्षिप्त रहगये और प्रूफकी गलतियां न सुधार कर सकी। आशा
है शीघ्र ही अग्रिम प्रकाशनमें सुधार हो जायगा।

यात्रियों तथा अनुसंधान कर्ताओं का विशेष ध्यान करके
पुस्तक में विषयों का समावेश किया गया है आशा है वे
लाभान्वित होंगे।

सामग्री संकलन में अपने बन्धु श्रीरमाशङ्कर उपाध्याय
'...वे' और पञ्चकोशी परिक्रमाके चित्र निर्माण के लिए अपने
सहयोगी अध्यापक श्री खलीक का मैं आभारी हूँ।

मैं करबद्ध पुर्वाभार उन महानुभावों के प्रति प्रकट करता
हूँ जो इस पुस्तक की उपादेयता बढ़ाने में समय समय पर परा-
मर्श देते रहेंगे।

विनीतः—

रामरक्षा त्रिपाठी 'निर्भीक'

एम० ए०, ए० टी० सी०

शास्त्री, साहित्यरत्न

एक्स म्युनिसिपल कमिश्नर

६७३ रायगंज अयोध्याजी

...क्षय नवमी

... २०२३ वि०

विषय-सूची

❀ श्रीरामाजयति ❀

श्रीअयोध्या-दिग्दर्शन

अयोध्या गाईड

अष्टचक्रा नवद्वारा देवाना पूः अयोध्या ।
तस्यां हिरन्मयः कोषः स्वर्गो ज्योतिषावृतः ॥

अथर्वणे उत्तरार्द्धे ।

यान्योध्या पूः सा सर्ववैकुण्ठानामेव मूलधारा मूलप्रकृतेः परा तत्सद् ब्रह्ममया विरजोत्तरा दिव्य-रत्नकोषा, तस्यां नित्यमेव सीतारामयोः विहारस्थलमस्तीति ।"

अथर्वणे उत्तरार्दे ।

वरेण्या सर्वलोकानां हिरण्या चिन्मया जया ।
अयोध्यानन्दिनी सत्या राजिता अपराजिता ॥ ४७ ॥
कल्याणी राजधानी या त्रिपादस्य निराश्रया ।
गोलोक हृदयस्था च संस्था सा साकेतपुरी ॥ ४८ ॥

वशिष्ठसंहितायाम ।

विष्णोः पादमवन्तिकां गुणवतीं मध्ये च काञ्चीपुरम् ।
नाभिद्वारवतीं पठन्ति हृदयं मायापुरीं योगिनः ॥
ग्रीवामूल मुदाहरन्ति मथुरां नासाञ्च वाराणसीम् ।
एतद्ब्रह्मपदं वदन्ति मुमयोऽन्योध्यापुरीं मस्तकम् ॥
अयोध्या-मथुरा-माया-काशी-काञ्ची ह्यवन्तिका ।
पुरी-द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥

[प्रसिद्धि]

श्रीअयोध्या जी का

धार्मिक और ऐतिहासिक महत्ता

—०:*:०—

श्री अयोध्या जी समस्त हिन्दू जाति का एक प्रमुख तीर्थ है। ब्रह्मानन्दद्रव नेत्रजा श्री सरयू जी के दक्षिण तट पर अवस्थित है। इसकी अलौकिक पवित्रता अथवा आध्यात्मिक महिमा एवम् ऐतिहासिक गरिमा का गुणगान करना सूर्य को दीपक दिखाना है। यह युग-युगान्तर तक विश्वविजयी चक्रवर्ति रघुवंसियों की राजधानी रही है। यह अपने अलौकिक ऐश्वर्य और दिव्य वैभव के कारण अमरावती से भी श्रेष्ठ मानी जाती है। इसे भगवान् मनु ने बसाया था। यहीं से उन्होंने मानवी सृष्टि का विस्तार और यहीं पर मानव-धर्म-शास्त्र का निर्माण किया था। इस आदि-राजधानी के वे ही आदि-पुरुष आदि नृपति थे। मनुकी सन्तान होने ही से हम लोग नर-जाति के प्राणी मनुज या मनुष्य कहलाते हैं। उन्हीं के कुल में और उन्हीं की आविर्भूत की हुई इसी पुण्यतमा अयोध्या में आदर्श नायक मर्य्यादा पुरुषोत्तम स्वयं भगवान् श्रीरामचन्द्रजी अवतरित हुए। इससे अधिक और इसकी पवित्रता एवम् महत्ता का क्या प्रमाण हो सकता है? इसकी अपूर्व अध्यात्मिक महत्ता की इतनी व्यापकता है कि जैन, बौद्ध सभी इसे अपना सर्वोत्कृष्ट तीर्थ मानते हैं। जैनों के आदि तीर्थङ्कर आदिनाथ
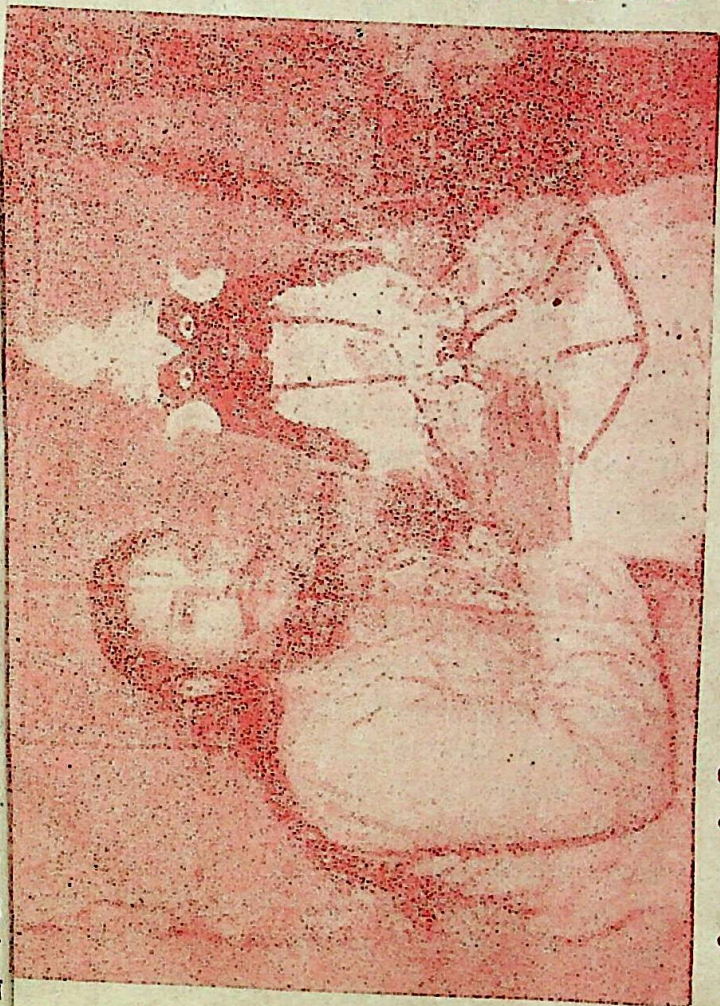
श्री पुजारी सिया राघव शरण जी जन्म-भूमि अयोध्या जी।

(ऋषभदेव) यहीं हुए हैं; तथा और भी चार, तीर्थंकरों का जन्म यहीं हुआ है। श्वेताम्बर और दिगम्बर, दोनों श्रेणियों के जैनियों की श्री अयोध्या प्रतिष्ठित पीठ है। दोनोंके प्राचीन मन्दिर भी यहां है। बौद्ध साहित्य में अयोध्या जी का "साकेत" नाम अधिक प्रसिद्ध है। दिव्यावदान में साकेत शब्दकी व्युत्पत्ति इस प्रकार लिखी है—"स्वयमागतं स्वयमागतं साकेत साकेतमिति संज्ञा संवृता"। इसका अर्थ यह है कि-स्वयम् (आपसे आप) आविर्भूत होनेसे अयोध्या को साकेत कहते हैं। भागवान बुद्धने श्री अयोध्या ही में अपने विश्व-व्यापक धर्म-सिद्धान्त निर्धारित किये थे। वे वर्षा ऋतुमें साकेतही में रहा करते थे। बौद्ध-जगत् का एक परम श्रद्धेय बोधिवृक्ष भी यहां (दन्तधावन-कुण्ड) पर था, जो किसी समय; किसी असती रानी के स्पर्श से तत्काल सूख गया।

श्री अयोध्या जी की अद्भुत-आध्यात्मिक-महिमा से मुसलमान भी आकृष्ट हुए बिना न रहे। हिन्दुओं की तरह वे भी अयोध्या को अपना मुख्य तीर्थ समझते हैं। वे उसे "खुर्द-मक्का" कहते हैं। "मदीनतुल औलिया" नामक पुस्तक में कहा गया है कि अयोध्या जी में हजरत आदम से लेकर अब तक कितने ही औलिया हो चुके हैं। अस्तु; श्रीअयोध्याकी पावन रजमें लोटना हिन्दु. मुसलमान दोनों ही अपना परम सौभाग्य समझते हैं। श्रीअयोध्या को 'सिद्धों की सराय' कहते हैं। इसकी अद्वितीय अध्यात्मिक महिमा को सिद्ध-सन्तों ने ही समझा है। इसी से चाहे वे किसी मत-सम्प्रदाय के हुये हो उन्होंने अयोध्या जी के प्रति अपनी एकान्त श्रद्धा प्रकट की है।

अयोध्या माहात्म्य में लिखा है:-अयोध्याके दर्शन से मनुष्य अपने जन्म जन्मान्तर के किए हुए पापो से मुक्त हो जाता है।

अयोध्या दर्शनं यस्तु करोतु मनुजो यदि ।
सप्तजन्मकृतं पापं नश्यते नात्र संशयः ।

(अ० ८भा०२-२०)

श्रीगोस्वामीजी ने रामचरित मानस में भगवान श्रीरामचन्द्रजी के श्रीमुखसे अयोध्या की महिमा इस भाँति वर्णन की है:—

सुनु कपीस अंगद लंकेसा । पावन पुरी रुचिर यह देशा ॥
जद्यपि सब वकुण्ठ बखाना । वेद पुरान विदित जग जाना ॥
अवधपुरी सम प्रियनहि सोऊ । यह प्रसङ्ग जानइ कोउ कोऊ ॥
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि । उत्तरदिसि वहि सरयू पावनि ॥
जो मजन ते विनहि प्रयासा । मम समीप नर पावहि वासा ॥
अति प्रिय मोहि यहाँके वासी । मम धामदा पुरी सुखरासी ॥

प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में लिखा है कि इसमें १८ आवरण हैं । १० भीतरी और ८ बाहरी । इसके द्वादस (१२ नाम मुख्य हैं:—अयोध्या; अपराजिता; नन्दिनी, सत्या विमला, कौशला ब्रह्मपुरी, प्रमोदवन, साकेत; शान्तिनिकेतन; सत्यलोक और दिव्य लोक ।

इसके चारों दिशाओं में चार पर्वत थे । उत्तर में मुक्ताद्रि, पूर्व में शृङ्गागहि, दक्षिण में मणिकूट (रत्नाद्रि)और पश्चिम में लीलाद्रि । प्रत्येक पर्वत के आश्रित तीन-तीन वन थे इस प्रकार अयोध्या में द्वादस वन थे । इन वनों और पर्वतों के रेखा चित्र इस भाँति है:—

पर्वतों एवं बनों का बिवरण
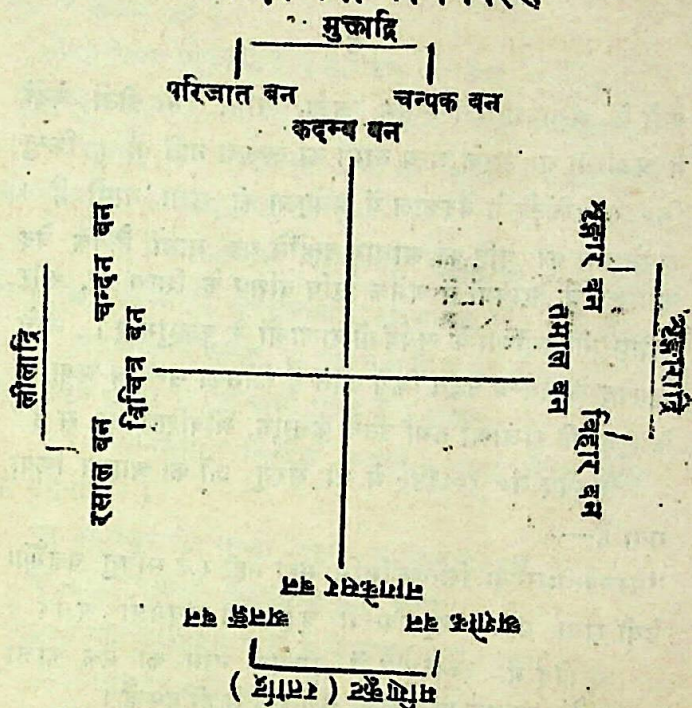
विवरण—श्रृंगाराद्रि—नीलमणिमय है। इसे नीलाद्रि भी कहते हैं। इसकी अधिष्ठात्रीदेवी आह्लादिनीशक्ति हैं।

मुक्ताद्रि—चन्द्रकान्त-मणिमय है। इसकी अधिष्ठात्री श्री देवी हैं।

लीलाद्रि—पद्मराग-मणिमय है। इसकी अधिष्ठात्री लीला देवी हैं।

मणिकूट—(रत्नाद्रि) पीतमणिमय है। इसकी अधिष्ठात्री भू देवी हैं।

अयोध्या का धार्मिक परिचय।

क

वेदों में अयोध्या जी—ऋग, यजुः, साम, इन तीनों वेदों में अयोध्या या उसके अन्य नामों का उल्लेख नहीं है। किन्तु मिस्टर पार्जिटर ने वेदकाल में अयोध्या की सत्ता मानी है। अपने मत की पुष्टि का आधार उन्होंने यह माना है कि वेद के मन्त्रों के ऋषियों में अनेक ऋषि वशिष्ठ के शिष्य थे, और वशिष्ठ जी अयोध्या के सूर्यवंशी राजाओं के कुलगुरु थे। नीचे ऋगवेद के वेमन्त्र उद्धृत किये जाते हैं जिनका सम्बन्ध अयोध्या के सूर्यवंशी राजाओं तथा उनके कुलगुरु श्रीवशिष्ठ जी से है।

ऋक्वेद मं० १०।६४९ में श्री सरयू जी का आह्वान किया गया है—

"सरस्वतीःसरयुः सिन्धुरूर्मिभिः महो मही र व सायंतु वक्षणीः देवी राग्रो मातरः सूदयिन्त्वो घृतवत्पयो मधुमन्नो अर्चत।

ऋगवेद मं० १०।६४।४ में इक्ष्वाकु नाम का एक राजा आया है। इक्ष्वाकु वंशी राजा अयोध्या में ही हुए हैं।

यस्येक्ष्वाकुरूप व्रते रेवान्मराभ्येधते।
दिदीव पञ्च कृष्टयः॥

ऋक्वेद मं० ८।३९।८ में युवनाश्वके पुत्र मान्धातृ का नाम आया है जो इक्ष्वाकु वंशी राजाओं में बीसवीं पीढ़ी मेंहुए—

"भी अग्निः सप्तमायुषः श्रितो विश्वेषु सिंधुषु।
यमागन्म त्रिपस्त्य मंधातुर्दस्यु हन्तममग्निं
पत्तषु पूर्व नभं तामन्यके समे।

ऋग्वेद मं० ८।४०।४२ में मान्धातृ आंगिरस ऋषि के बरावर समझे गये हैं।

"एवेन्द्राग्निनां पितृवन्नवीयो मान्धातृ वदं गिर स्वदयाचि। विधातुना शर्माणां पातमस्यान्वयं स्याम पतयो रयीणां॥"

ऋग्वेद मं० १०।१।३४ मन्त्र का ऋषि ही यौवनाश्व मान्धाता है। अन्तिम मन्त्र यह है—

"नकिर्देवा मनोमसि नक्किरायो पयामसि; मन्त्र श्रुत्यं चरामसि। पक्षेभिरमि कक्षेभिरत्राभि संरभामहे॥"

अथर्ववेद के काण्ड १० सूत्र २ में मन्त्र संख्या २८ से ३३ तक अयोध्या का उल्लेख पाया जाता है। यथा—

(ऊर्ध्वोनुसृष्टा ३ स्तिर्यङ्‌ न सृष्टा ३ सर्वा दिशः पुरुष आ वभूवां ३।)

पुरं यो ब्रह्मणोवेद यस्या पुरुष उच्चयते॥२८॥
यो वै तां ब्रह्मणो वेदामृतेनावृतां पुरम्।
तस्मै ब्रह्म च ब्रह्माश्च चक्षुः प्राण प्रजाः ददुः॥२९॥
नवै तं चक्षुर जहाति न प्राणो जरसः पुरः।
पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते॥३०॥
अष्टचक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरन्मयः कोशः स्वर्गोज्योतिषा वृतः॥३१॥
तस्मिन् यद् यज्ञ मात्मन्वत तद्वै ब्रह्मविदो विदुः॥३२॥
प्रभ्राजमानां हरिणीं वशंसा संपरीवृतम्।
पुरं हिरन्मयीं ब्रह्मा विवेशापराजिताम्॥३३॥

पुराणों में:— (ख)

प्रसिद्ध है कि सूर्य्यवंशी राजाओं की अयोध्या ही प्रधान राजधानी रही है। जितने राजा इस वंश में हुये हैं उतने राजा किसी अन्य वंश में अथवा राजधानी में नहीं हुये जो एक ही वंश की पीढ़ी में हों। पुराणों में सूर्य्यवंशी राजाओंकी वंशावली में १२३ नाम मिलते हैं।

पर्जिटर महोदय ने इस धारणा को प्रमाणित करते हुए लिखा है कि इतनी लम्बी वंशावली तक राजतन्त्र अयोध्या में इस कारण चलता रहा कि यह पश्चिमी आक्रमणों से दूर होने के कारण सुरक्षित और अटूट रह सका तथा यहाँ का राजतन्त्र अत्यन्त पुष्ट रहा।

वेण्टली महोदय ने अपनी लिखी पुस्तक ग्रहमञ्जरी में सूर्य्यवंश का कालक्रम ईशा पूर्व २२०४ वर्ष निकाला है।

वेण्टली महोदय के मतानुसार मनु ही अयोध्या के मूल सँस्थापक हैं। उन्होंने अयोध्या को बसा कर अपनी बेटी इला मनुको दे दिया जिसके सम्बन्ध से अयोध्या पर सूर्य्यवंशी राजा इक्ष्वाकु का प्रथम राजतन्त्र प्रतिष्ठित हुआ। मनु ने ही अयोध्या की सीमा निर्धारित की थी।

पुराणों में पाँच वैकुण्ठों का वर्णन है:—

वैकुण्ठँ पञ्च विख्यातँ क्षीराब्धि च रमाव्ययम्।
कारणं महावैकुण्ठँ पञ्चम विरजा परम्॥

इन पाँच वैकुण्ठों में "विरजा परम" शब्द से अयोध्या को ही समझना चाहिये। अयोध्या का वर्णन यद्यपि अनेक पुराणों में है किन्तु विशेष रूप में स्कन्दपुराण; ब्रह्मपुराण, आदि पुराण, भार्गवपुराण. भविष्यपुराण. नारदपुराण, श्रीमद्भागवत पुराण का विशेष वर्णन है।

काव्य सन्दर्भ

काव्य ग्रन्थों में वाल्मीकि रामायण सबसे प्राचीन है। वाल्मीकि की कथा के नायक भगवान रामचन्द्र की जन्मभूमि ही श्री अयोध्या जी है। वाल्मीकि में अयोध्या को मर्त्यलोक की अमरावती माना है। इस ग्रन्थ में अयोध्या की लम्बाई बारह योजन, चौड़ाई तीन योजन कही गई है।

'अयोध्या नाम तत्रास्ति नगरी लोक विश्रुता।
मनुना मानवेन्द्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम्॥'
आयता दश चद्वे च योजनानि महा पुरी।
श्रीमतो त्रीणि वि तीर्णा नाना संस्थान शोभिता॥

(बाल कांड)

इनके भीतर अन्तर्गृह का भाग जो परिखाओं. (खाइयों) से घिरा सुरक्षित है उसके सम्बन्ध में लिखा है—

"सा योजने द्वे च भूयः सत्यनामा प्रकाश्यते"

जानकीहरण (कुमार दास)

आसीदवन्यामतिभोगभाराद्दिवोऽवतीर्णा नगरीव दिव्या।
क्षत्रानल स्थान शमी समृद्धया पुरामयोध्येति पुरी परार्ध्या॥
कृत्वापि सर्वस्यमुद समृद्धया हर्षाय नामूदभिसारिकाणाम्।
निशासुया काञ्चन तोरणस्थरत्नांशुभिर्भिन्नतमिस्त्रराशिः॥
स्वबिम्बमालोक्य ततँ महाणा मादर्शभित्तौ कृतवन्ध्यघातः।
रथ्या सुयस्याँ रदिनः प्रेमाणँ चक्षुर्मदामोद भरिद्विपानान्॥

यत्र क्षत्तोद् बृँहित तामसानि रत्ताश्मनीलोपल तोरणानि ।
क्रोध प्रमोदौ विदधुः विमाभिः नारी जनस्य भ्रमतो निशासु ॥

बौद्ध. जैन. इस्लाम. सिक्ख तथा अन्य साहित्यमें

(क)

बौद्धमत तथा अयोध्या

हुवान चाँग ने पिकोसिया अयोध्या) की परिधि १६वीं मानी है । उसकी यात्राके समव अयोध्या जँगलोंसे घिर गई थी ।

पहिला चीनी यात्री फाहियान अयोध्या आया था । उसने अयोध्या का नाम शाची लिखा है जो साकेत का पर्य्याय है ।

जेम्सलेग की पुस्तक फहियान्स ट्रवेल्स है । उसमें अयोध्या का वर्णन है । उसका अनुवाद इस प्रकार है—

"यहाँ से तीन योजन दक्षिण पूर्व चलने पर शाची का विशाल राज्य मिला । शाची नगर के दक्षिण फाटक से निकलने पर सड़कके पूर्व वह स्थान है जहाँ बुद्धदेवने अपनी दातून गाड़ दीं थी ।वह उगी और सात हाथ ऊँचा पेड़ होकर रुक गया, न बढ़ा न घटा । विरोधी ब्राह्मण बहुत बिगड़े । उन्होंने कभी पेड़ को काट डाला; कभी उखाड़ कर फेक दिया, परन्तु वह उसी स्थान पर फिर जमा । यहीं वह भी स्थान है जहाँ बुद्ध बैठते थे और टहलते थे और उसी स्थान पर एक स्पूत बना था जो अब तक विद्यमान है ।

वेटर्स ने एक ग्रन्थ ट्रैवेल्स आफ हुआन चाँग लिखा है । उसमें भी यात्रा के सिलसिले में अयोध्या का वर्णन है । उसका आशय इस प्रकार है—

अयोध्या प्रान्त पाँच हजार लीके घेरे में था। वहाँ के निवासी वड़े सुशील विद्याव्यसनी और पुण्य कर्मों के अनुरागी थे। इसमें सौ से ऊपर बौद्धमठों में महायान तथा हीनयान दोनों के मानने वाले तीन हजार भिक्षु रहते थे। इसमें दस देव मन्दिर थे और बौद्धधर्म के मानने वालों की संख्या कम थी।

ख)

जैनमत और अयोध्या

जैन मत के जो ग्रन्थ संस्कृत में हैं उनमें अयोध्या नगर की वड़ी प्रशंसाकी गई है। 'त्रियष्टिशलाका पुरुष चरित्र' नामक ग्रन्थ के प्रथम पर्व द्वितीय सर्ग में अयोध्या के विशाल वैभव का उल्लेख है। उसमें लिखा है कि इन्द्र की आज्ञा से अयोध्या को कुवेर ने वसाया था जो वारह योजन लम्बी और नौ योजन चौड़ी थी।

कलकत्ता के प्रसिद्ध जैनविद्वान पूर्णचन्द्र नाहर ने इस कथानक की पुष्टि करके तिलक मञ्जरी में वर्णित अयोध्या के इतिहास का उल्लेख किया है। जैन मतानुसार पाँच कल्याणक भूमियां हैं, उनमें अयोध्या का नाम सर्व प्रथम है। पूरन चन्द्र नाहर के लेख के अनुसार अयोध्या में ४५ कल्याणक महापुरुषों ने जन्म लिया है।

जैन मत में २४ तीर्थंकर माने गये हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं:—

नाम	वंश	पिता	माता
१-आदिनाथ (ऋषभदेव)	इक्ष्वाकुवंशी	नाभि	मरु
२-अजितनाथ	"	जितशत्रु	विजया
३-सम्भवनाथ	"	जितारि	रानी सेना
४-अभिनन्दननाथ	"	राजा सम्बर	सिद्धार्थी
५-सुमतिनाथ	"	राजा मेघ	सुमङ्गला
६-पद्मप्रभ	"	श्रीधर	सुषीमा
७-सुपार्श्वनाथ	"	प्रतिष्ठ	पृथिवी
८-चन्द्रप्रभ	"	महासेन	लक्ष्मणा
९-सुविधनाथ	"	सुग्रीव	रमा
१०-शीतलनाथ	"	दृढ़रथ	सुसनन्दा
११-श्रीअंशनाथ	"	विष्णु	विष्णा
१२-वसु पूज्य	"	वसु पूज्य	जया
१३-विमलनाथ	"	कृतवर्मा	श्यामा
१४-अनन्तनाथ	"	सिंहसेने	सुयशा
१५-धर्मनाथ	"	भानु	सुव्रता
१६-शान्तिनाथ	"	विश्वसेन	अचिरा
१७-कुन्त नाथ	"	सूर	श्री
१८-अरनाथ	"	सुदर्शन	देवी
१९-मल्लिनाथ	"	कुम्भ	पार्वती
२०-मुनि सुव्रत	"	सुमित्र	पद्मावती
२१-नमिनाथ	"	विजय	विप्रा
२२-नेमिनाथ	"	समुद्र विजय	शिवा
२३-पार्श्वनाथ	"	अश्वसेन	वामा
२४-महावीर (वर्द्धमान)	"	सिद्धार्थ	त्रिशला

इन तीर्थंकरों में सब इक्ष्वाकु-बंशी हैं जिनका अयोध्या राजवंश से सम्पर्क रहा है। इनमें आदि तीर्थंकर राजा ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या ही मानी जाती है। प्राचीन काल से उनकी स्मृति में सप्तसागर के उत्तर वक्सरिया टोला में मन्दिर बना हुआ है। जिसके प्राचीन वैभव को मुहम्मदगोरी के भाई शाह-जूरान ने नष्ट करवा दिया था।

"हिन्दी जैन इनसाइकलो पीडिया" भाग १ पाना ८९ में ऋषभदेव का निर्माण-काल ४१३४५२, ६३०, ३०८, २०३, १७७. ७४९, ५१२, १९१. ९९९, ९९९, ९९९, ९९९; ९९९, ९९९; ९९९ ९९९. ९९९; ९९९; ९९९; ९९९; ९९९; ९९९; ९९९; ९९९; ९९९ ०४७३ (७६ अङ्क) वर्ष माना गया है।

जैन मत का सबसे प्रमाणित ग्रन्थ आदि पुराण है जो जिन सेनाचार्य द्वारा आठवीं शताब्दी विक्रमी में लिखा गया था। आदि पुराण के आठवें अध्याय में अयोध्या का बड़ा मनोहर वर्णन है।

तौ दम्पती तदां तत्र भोगैकरसतांगतौ।
भोग भूमि श्रियं साक्षात चक्रतुः वियुतावपि॥
तस्यामलंकृते पुण्ये देशे कल्पाङ्घ्रपातये।
तत्पुण्यैर्मुहुराहूतः पुरहुतः पुरींदधात्॥
सुरा स संभ्रमा सद्यः पाक शासन शासनात।
तां पुरीं परमानन्दात च्युधः सुर पुरी निभाः॥
स्वर्गस्यैव प्रतिच्छन्दं भूलोंऽस्मिन् निधित्सुभि।

विशेष रमणीयैव निर्ममे साऽमरैः पुरी ॥
स्वस्वर्गः त्रिदशावासः स्वल्प इत्येव मन्यते ।
परः शतजनावास भूमिका तान्तु ते व्यधुः ॥
इतस्ततश्चविक्षिप्तानानीयानीय मानवान् ।
पुरीं निवेशयामासुः विन्यासैः विविधै सुराः ॥
नरेन्द्र भवमं चास्याः सुरैः मध्ये निवेशितम् ।
सुरेन्द्रः नगरस्पर्धि पराध्यें विभवान्वितम् ॥
सूत्रामासूत्रधारोऽस्याशिल्पिनः कल्पजा सुराः ।
वास्तु जातामही कृत्स्ना सोपानास्तु कथम्पुरी ॥
संचक्रुश्वतां वप्र प्रकारपरिखादिभिः ।
अयोध्या न पर नाम्ना गुणो नाप्यरिभिः सुरः ॥
साकेत रुढ़िरयप्स्या श्लाघ्यैव सुनिकेतनैः ।
स्वनिकेत इवाह्वातु साकूतेः केतबाहुभिः ॥
सुकोशलेति विख्याति सादेशाभिख्यागता ।
विनात जनता कीर्णा विनीतेति च सा मता ॥

इस्लाम ग्रन्थों में

किसी भी प्राचीन प्रमाणिक इतिहास के ग्रन्थ से यह बात पुष्ट नहीं होती कि अयोध्या का इस्लाम धर्म से भी कोई मौलिक सम्बन्ध रहा है। अयोध्या में कुछ प्राचीन इस्लामी समाधियां और मस्जिदें बनी हैं। इतिहास के पढ़ने से ज्ञात होता है कि ये समाधियां उन लोगों की है जो इस्लाम धर्म के प्रचार की दृष्टि से इधर आये और लड़ाई में मारे गये। बाद-

शाहों ने धार्मिक मोलवियों के कहने पर यहां के मुसलमानों के लिए नमाज पढ़नेके वास्ते मसजिदें बनवा दिया।

ऐसा ज्ञान पड़ता है कि अयोध्या को इस्लामी इबादत गाह सिद्ध करने की हठधर्मिता से कुछ समाधियां प्राचीन लोग के नाम से बनवाई गई हैं जैसे अयुब और शीधा की कब्रें।

अकबर सम्राट के मन्त्री अबुल फजल के एक लेख से उक्त दोनों कब्रों की प्राचीनता का कुछ प्रमाण मिलता है, आइन अकबरी जिल्द दोम सफहा १४५ पर लिखा है कि इस शहर में दो बुजुर्गों की कब्रे हैं जिसमें एक ६ गज लम्बी है और दूसरी ७ गज। अयोध्या के एक कब्रिस्तान को मुसलमान लाग खुर्दम का भी कहते हैं।

इतिहास इस बात का सांक्षी है कि मुसलमान यहां ग्यारहवीं शताब्दी में ही पहिले पहल आये।

महमूद गजनी का भानजा सैयद सालार मसूदगाजी अयोध्याकी ओर बहराइच तक आया जैसा कि अवध गजेटियर वाल्यूम एक पृष्ठ ३ से ज्ञात होता है। तारीख सैय्यद सलार मसऊद गाजी, में भी उसके अयोध्या आने का कोई जिक्र नहीं है। केवल एक पुस्तक दर विहिश्त में उसके अयोध्या आने का उल्लेख है।

इसके पीछे सुल्तान मुहम्मद गोरी का भाई मखदूम शाह जूरानगोरी अपने भाईके साथ अयोध्या आया जिसने उस समय के प्रसिद्ध स्थान जैन धर्माचार्य श्री ऋषभदेव के देवालय को

नष्ट भ्रष्ट कर दिया, और लड़ाई में उसी स्थान पर उसकी मृत्यु भी हुई। जैन देवालय का यह खंडहर शाह जूरान के टीले के नाम से प्रसिद्ध है जो बकसरिया टोला में है।

मुसलमानों के समय में भी अयोध्या नगर लगातार अवध प्रान्तकी राजधानी रहा और केन्द्रीय राजधानी दिल्ली की ओर से नियुक्त किये हुए हाकिम यहाँ रहते थे, जिनके निवास स्थान तथा न्यायालयों के खण्डहर अभीं तक पाये जाते हैं। कटरा में मीर खान्दान उन्ही हाकिमों के वंशज हैं। यह खानदान ईरान सब्जवार नामक स्थानसे शाह इल्तुत मिश गोरी के साथ हिन्दुस्तान आया और कुछ समयमें अवध सूबा की सूबेदारी सैय्यद अलाउद्दीन मुसन्निफ मामुकीमा को दी गई। आज भी हवेली अवध उसी खानदान के पास है। उस खानदानके मीर सैय्यद हबीब हैदरके पुत्र नबी हैदर उस माफी का उपभोग कर रहे हैं।

खालिकबारीका रचयिता, प्रसिद्ध कवि, अमीर खुशरो ने २ वर्ष अयोध्या में बिताकर अपनी पुस्तक की रचना यहां की भाषा में किया था।

तारीख फिरोज शाही में उल्लेख है कि मुहम्मद तुगलक को अयोध्या नगर का वह भाग जो दरिया सरयूके किनारे था बहुत पसन्द था उसने इस तट का नाम स्वर्गद्वार रक्खा। स्वर्गद्वार को प्राचीनकाल में मुसलमानी कागज पत्रों में हवेली अवध कह कर लिखा जाता था। आज भी इसी आधार पर परगना हवेली अवध लिखा जाता है।

अयोध्या का विस्तार

स्कन्द् पुराण; वैष्णव खण्ड–अयोध्या माहात्म्य (१२९)

महाक्षेत्र कुरुक्षेत्रमें जब महात्मा राजा श्री रामचन्द्रजीका बारह वर्षोंमें पूरा होने वाला यज्ञ चल रहा था; व्यास शिष्य सूतजी से भारद्वाज तथा अन्य ऋषियों ने पूछा 'अयोध्या का माहात्म्य सुनना चाहते हैं।'

सूतजीने बताया—"अयोध्या परम पवित्र पुरी है। पापियों को इसकी प्राप्ति बहुत कठिन है सरयू तटपर बसी यह पुरी बड़ी दिव्य है। इक्ष्वाकु आदि राजा यहां प्रजा पालन में तत्पर रहे हैं। भगवान विष्णुके दाहिने चरण के अँगूठे से गङ्गा जी; बायें चरणके अँगूठेसे शुभकारिणी सरयू निकली है इसमें स्नान करने मात्र से मनुष्य ब्रह्म हत्या का नाश कर डालता है।

आकार कहते हैं ब्रह्माको. यकार विष्णुका नाम है। धकार रुद्र स्वरूप है। इन सबके योग से अयोध्या नाम शोभित है महापातक इस पुरीसे युद्ध नहीं कर सकते हैं। भगवान विष्णु की आदि पुरी है, सुदर्शन चक्र पर स्थित है।

सहस्रधारा तीर्थसे पूर्व दिशामें एक योजन तक और सम नामक स्थानसे पश्चिम दिशामें एक योजन तक, सरयूसे दक्षिण दिशामें एक योजन तक और तमसा से उत्तर दिशामें एकयोजन तक अयोध्या की स्थिति है। यही भगवान विष्णुका अन्तगृह है यह विष्णुपुरी मछलीके आकारकी बतलाई गई है पश्चिम दिशा में गोप्रतार तीर्थसे असीतीर्थ पर्य्यन्त इसका मस्तक है, पूर्व दिशामें उसका पुच्छ भाग है, दक्षिण और उत्तर दिशामें इसका मध्य भाग है।"

प्रधान स्थान

इस ग्रन्थमें स्कन्द पुराणके अनुसार अयोध्या सीमाके भीतरके कुछ प्रसिद्ध स्थानोंका उल्लेख किया जा रहा है।

विष्णुहरि—(चक्रतीर्थ) "विष्णुशर्मा नामक विद्वान तीर्थ यात्राके लिए अयोध्या आये। शाकाहारी होकर तीन वर्ष तक समाधिस्थ दशामें भगवानका ध्यान किया। भगवान विष्णु प्रकट हुए। प्रसन्न होकर विष्णुशर्माके लिये विष्णुने अपने चक्र से उस स्थल को खोदकर पाताल मण्डलसे गङ्गाजी का जलप्रेकट किया। तबसे वह स्थान चक्रतीर्थके नामसे विख्यात हुआ। विष्णुशर्माने वहां विष्णुहरिकी मूर्ति स्थापित किया कार्तिक शुक्ल दशमीसे पूर्णिमा तक वार्षिक यात्रा होती है।

ब्रह्मकुण्ड—जगत सृष्टा ब्रह्माजीने विष्णुको अयोध्यामें निवास करते देखकर स्वयं भी रहनेका निश्चय किया। इन्होंने अपने नामका एक विशाल कुण्ड बनाया; जो ब्रह्मकुण्डके नाम से प्रेसिद्ध हुआ। यह चक्रतीर्थसे पूर्व दिशामें स्थित है।

ऋणमोचन—चक्रतीर्थ से पूर्वोत्तर दिशामें ऋणमोचन सातसौ धनुषकी दूर पर सरयूके जलमें ऋणमोचन नामक तीर्थ है वहां मुनिवर लोमशजीने तीर्थ यात्रा करते समय स्नान किया था इससे वे ऋणमुक्त होकर पाप शून्य हो गये। उन्होंने दोनों हाथ उठाकर आँसू बहाकर कहा; "यह ऋणमोचन बहुत उत्तम तीर्थ है। लौकिक पारलौकिक तीनों प्रेकार के ऋण यहांके स्नानसे नष्ट हो जाते हैं।

पापमोचन—ऋणमोचन तीर्थसे पूर्व दिशा में बीस धनुष की दूरी पर पापमोचन तीर्थ है। यह भी जल में है।

पञ्चालदेश वासी हत्यारा वेद निन्दक नरहरि नामक ब्राह्मण साधु संगति में तीर्थयात्रा के समय यहां आया और स्नान करके पाप मुक्त हुआ।

सहस्रधारा—पापमोचन तीर्थ से पूर्व १०० धनुप दूर पर सहस्रधारा नामक तीर्थ है। उसी में स्नान करके रामचन्द्र की आज्ञा से वीर लक्ष्मण ने योगशक्ति द्वारा प्राण त्याग कर शेष रूप को पुनः प्राप्त किया था। इस क्षेत्र का प्रमाण २५ धनुप है। श्रावण शुक्ला पञ्चमी को शेष जी का उत्सव करना चाहिये। नागपूजा पूर्वक ब्राह्मणों को सन्तुष्ट करने से सर्प जाति प्रसन्न होती है। वैशाख मास में स्नान करने का माहात्म्य है।

स्वर्गद्वार—सहस्रधारा से लेकर पूर्वदिशा में ६२६ धनुष तक जल में स्वर्गद्वार तीर्थ है। स्वर्गद्वार में निराहार व्रत तथा एक मास तक उपवास करने का माहात्म्यम कहा गया है। इसी स्वर्गद्वार में कैलासवासी शिव जी भी निवास करते हैं।

चन्द्रहरि—चन्द्रमा अयोध्यावासी बिष्णु के साक्षात्कार के लिये तीर्थ करने आये। अयोध्याके तीर्थों में विधियुक्त स्नान किया वहीं पर चन्द्रहरि भगवानकी अर्चाविग्रह स्थापित किया। श्रीविष्णु की अत्यन्त गूढ़ स्थान है। यहां भगवान चन्द्रहरि के आगे ब्राह्मणकी प्रधानतामें चन्द्र सहस्र व्रतकी उद्यापन विधि है। इस अवसर पर चन्द्रमाकी पूजा स्कन्दपुराणमें बताई गई है।

धर्महरि—चन्द्रहरि के स्थान से अग्निकोण में भगवान धर्महरि के नामसे विराजमान हैं। वेद और वेदाङ्गों के तत्वज्ञ तथा अपने वर्णाश्रमोचित कर्ममें तत्पर धर्मनामक ब्राह्मण तीर्थ-यात्रा के निमित्त अयोध्या पधारे। तीर्थ माहात्म्य पर मुग्ध हो गये। वे नृत्य करने लगे। भगवान प्रकट हो गये। धर्म ने उनकी स्तुति की। धर्म को विष्णु भगवान ने वरदान दिया, धर्मने धर्म हरि भगवान की स्थापना की। अषाढ़ शुक्ला एकादशीको वार्षिक यात्रा होती है।

स्वर्णखनि—धर्महरिसे दक्षिण दिशामें स्वर्णखनि है, जहाँ कुवेरने राजारघुके भयसे कोत्समुनिकी प्रतिज्ञा पूर्तिके लिये स्वर्ण वृष्टिकी थी। वैशाख शुक्ला द्वादशीको वार्षिक यात्रा कही गई है।

सम्मेदतीर्थ—स्वर्णखनि से दक्षिण दिशामें तिलोकी और सरयू के संगम सम्मेदतीर्थ विख्यात है। यहाँ स्नान का महत्व है। भादों की अमावस्या को यहाँ का वार्षिक यात्रा विदित है।

सीताकुण्ड—सरयू तथा तिलोदकाके संगम के पश्चिम सीताकुण्ड विख्यात सिद्ध है। सीताजी ने स्वयं ही इस कुण्डका निर्माण किया हैं, भगवान राम ने वरदान देकर यहाँ के स्थान का फल प्रतिष्ठित किया है।

मार्गकृष्ण चतुरदशी यहाँका स्नान करने का विशिष्ट पर्व है।

चक्रहरि—भगवान विष्णुहरिके पश्चिम दिशामें चक्रहरि भगवान विष्णु का निवास है। मार्गशुक्ला द्वादशी को वार्षिक यात्रा होती है।

हरिस्मृत—चक्रहरि से पश्चिम हरिस्मृति मन्दिर है जहाँ वष्णु का निवास है।

गुप्तहरि--गुप्तहरि स्थान के निकट ही शुभ संगम है, जहां गोप्तारघाट से पश्चिम तीन योजन पर घाघरा नदी से सरयू का संगम हुआ है। यहीं पर गुप्तहरि का दर्शन होता है, कार्तिक की पूर्णिमा को विशेष रूप से यहां की व'र्पिक यात्रा होती है।

क्षीरोदकतीर्थ—सीताकुण्ड से वायव्य कोण में क्षीरोदक नामक तीर्थ है। यहां पर राजा दशरथ ने पुत्रेष्टि नामक यज्ञ की सिद्धि प्राप्त किया था। इसी स्थानपर अग्निदेव खीर लिये प्रकट हुये थे। आश्विन शुक्ला एकादशी को वार्पिक यात्रा होती है!

वृहस्पतिकुण्ड--क्षीरोदकसे नेऋत्यकोणमें वृहस्पतिकुण्ड हैं, भदौं शुक्ला पञ्चमी को वार्पिक स्नान होता है।

रुक्मिणीकुण्ड—वृहस्पतिकुण्ड के दक्षिण भाग में है; जिसे महारानी रुक्मणी ने बनवाया था; कार्तिक कृष्ण नवमी को स्नान होता है।

धनयक्षकुण्ड--रुक्मिणीकुण्ड के वायव्वकोण में धनयक्ष तीर्थ है। विश्वामित्र ने राजसूय यज्ञ करने वाले हरिश्चन्द्र से सर्वस्व दान ले लिया और सारा धन एक यक्ष को सौंप दिया और कहा कि यह तीर्थ धनयक्ष के नाम से प्रसिद्ध होगा माघ कृष्ण १४ को यहां की वार्षिकी यात्रा होती है।

वशिष्ठकुण्ड--धनयक्ष तीर्थ से उत्तर वशिष्ठकुण्ड है जहाँ वशिष्ठ और अरुन्धती का निवास है। भाद्र शुक्ला पञ्चमी को वार्षिक यात्रा होती है।

सागरकुण्ड---वशिष्ठकुण्ड से पश्चिम है।

योगिनीकुण्ड---सागरकुण्ड से नैऋत्य कोण पर है।

उर्वशीकुण्ड---योगिनीकुण्ड से पूर्व है।

घोषार्ककुण्ड---उर्वशीकुण्डसे दक्षिण है। रविवारके दिन स्नान करने से विशेषतः यदि सप्तमी भी हो तो असाध्य कुष्टतक नष्ट हो जाते हैं। घोष नामक राजा को यहाँ पर दिव्य रूप प्राप्त हुआ था और सूर्यदेव के दर्शन हुए थे। राजा ने सूर्यदेव की मूर्ति स्थापित कर दिया।

रतिकुण्ड---घोषार्क तीर्थ से पश्चिम रतिकुण्ड है।

कुसुमायुधकुण्ड---रतिकुण्ड के पश्चिम है।

मन्त्रेश्वरतीर्थ---कुसुमायुधकुण्ड के पश्चिम है, उसके उत्तर कमलों से सुशोभित एक सरोवर है। चैत्र शुक्ल १४ को यात्रा होती है।

महारत्नतीर्थ---मन्त्रेश्वर के पूर्व दिशा में है; भादों कृष्ण १४ को यात्रा होती है।

दुर्भरसरोवर---महारत्नतीर्थ के समीप नैऋत्यकोण पर है। भादों कृष्ण १४ को यात्रा होती है।

महाविद्यातीर्थ---दुर्भर सरोवर से ईशान कोण पर है। यहाँ सुन्दर सिद्ध पीठ है। आश्विन शुक्ला नवरात्र में यहाँ की यात्रा होती है।

दुग्धेश्वर---महाविद्या तीर्थके समीप है। क्षीरकुण्डके निकट में दुग्धेश्वर नामक शिवालय है। क्षीर संगमकुण्डका सीता जी ने बड़ा सत्कार्य किया है। ज्येष्ठ १४ को वार्षिक यात्रा होती है।
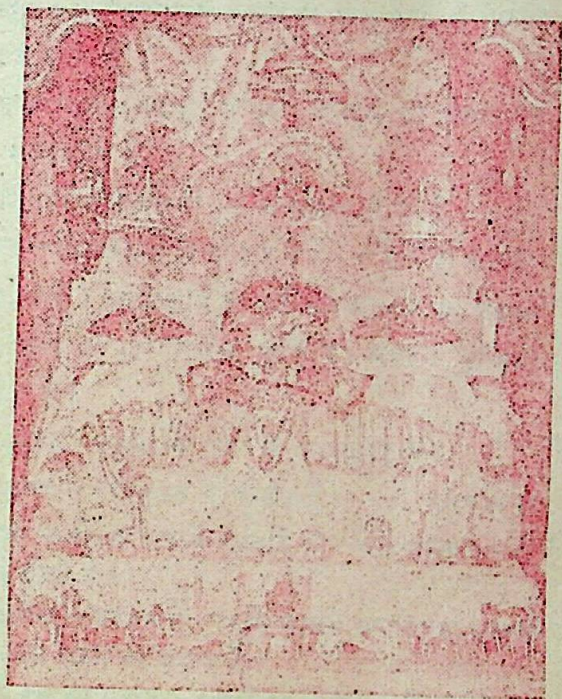
-:❀:-

श्रीराम जन्मभूमि श्रीअयोध्या जी

तपोनिधितीर्थ—दुग्धेश्वरतीर्थ के पूर्व है। श्रीसुग्रीव ने इस का निर्माण कराया था।

हनुमतकुण्ड—तपोनिधिकुण्ड के पश्चिम में है।

विभीषणकुण्ड—हनुमतकुण्ड के पश्चिम है।

गयाकूप—सोमवती अमावास्या को श्राद्ध करने से पितरों को मोक्ष प्राप्त होती है।

पिशाचमोचन—गयाकूप से पूर्व। अगहन की शुक्ला १४ को वार्षिक यात्रा होती है।

मानसतीर्थ—पिशाचमोचन के समीप ही में है।

तमसा—मानसतीर्थ के दक्षिण में है। समीप ही माण्ड-मुनि का आश्रम है। गौतमऋषि का भी यहां आश्रम था; च्यवन तथा पराशर ऋषि भी यहीं निवास करते थे। अगहन पूर्णिमा को यात्रा होती है।

भरतकुण्ड—तमसा के उत्तर में भरतकुण्ड है।

जटाकुण्ड—भरतकुण्ड के पश्चिम है। यहीं वनवास से लौटने पर राम ने अपनी जटायें कटवाई थी। चैत कृष्ण १४ को वार्षिक यात्रा होती है।

मत्तगजेन्द्र—उत्तरमें है। उसके सामने सप्तसागर नामक सरोवर में स्नान करने का महत्व है।

पिण्डारक का स्थान—मत्तगजेन्द्र के पश्चिम है।

विघ्नेश्वर—पिण्डारक के पश्चिम है।

श्रीरामजन्मस्थान—विघ्नेश से ईशाण कोण पर श्रीराम जन्मस्थान है। विघ्नेश से पूर्व वशिष्ठ से उत्तर, लोमश से पश्चिम

भाग में जन्मस्थान है; रामनवमीके दिन वार्षिक यात्रा होतीहै।

रामकोट— सम्राट विक्रमादित्य के वनवाये हुये प्राचीन कनक-भवन के पत्थर के किले (चहार दीवारी) को रामकोट कहते हैं। अब यह एक मुहल्ला वन गया है। रामदुर्ग अथवा रामकोट के चार द्वार रक्षक हैं, पूर्व द्वार के रक्षक सुग्रीव जी, पश्चिम के विभीषण जी, उत्तर के अङ्गद जी और दक्षिण के हनुमान जी हैं। इस पुरी के कोतवाल विभीषणात्मज श्रीमत्त-गजेन्द्र जी हैं।

जन्मभूमि—भूमण्डल की यह वह पवित्रतम भूमिका है, जहाँ पर मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजीका जन्म हुआ था ! यह स्वयंसिद्धि-पृष्ठ इतना पवित्र एवं महिमान्वित है कि यहाँ साधना करके स्वल्पकाल में ही अनेक साधक सिद्ध होगये हैं। आराधना करके कितने ही सन्तों ने भगवद्दर्शन का अपूर्व लाभ प्राप्त किया है। हिन्दुओं सिद्धों की गिनती की ही नहीं जा सकती, अयोध्या तो उनका घरही माना जाता है। यह सिद्धों की सराय ही कही जाती है। इसकी पवित्र रज के प्रसाद से कितने मुसलमान भी सिद्ध होगये हैं, जिनमें फज्लअब्बास भी प्रसिद्ध है। कहा जाता है; जिस समय फज्लअब्बास यहाँ निवास करते थे उसी समय प्रयाग के श्री गूदड़ बावा नामक एक सन्त पधारे।

श्री गूदड़ वावा जी के गुरु श्री देवमुरारीदासजी ने उन्हें आदेश दिया कि अयोध्याजी में मुसलमान सिद्ध इस समय बड़ा

उपद्रव कर रहे हैं, तुम जाकर उन्हें सान्त करो। अतः श्रीगूदड़ बाबा जी श्रीअवध पधारे। श्रीगूदड़ बाबा जी यहाँ श्रीजन्मभूमि पर रहने लगे। जब यह समाचार फज्लअब्बास को मालूम हुआ तब वह शेर पर सवार होकर बाबाजी से मिलने आया। स्वामी जी उस समय लघुशङ्का गये थे। आने पर कमण्डलु से जल लेकर उसकी ओर फेंक दिया। जल छिड़कते ही शेर बड़े जोर से भागा और कुछ दूर जाकर फज्लअब्बास का गला दबोच दिया, इसी समय बाबा जी भी वहीं पहुँच गये। फज्लअब्बास ने क्षमा मांगी; किन्तु बाबा जी ने कहा कि अब तू अपने किये का फल भोग। अस्तु फज्लअब्बास की कब्र वहीं बनी और जन्मभूमि के चार रावटी खम्भे उस पर लगाये गये। कहा जाता है कि इन्हीं फज्लअब्बास के आदेश और आग्रह से जन्मभूमि का (विक्रमादित्य का बनवाया हुआ) प्राचीन मन्दिर तोड़ बाबरशाहने उसी स्थान पर प्रसिद्ध बाबरी मस्जिद बनवाई, जो अब तक मौजूद है। इस समय जन्मभूमि का मन्दिर एक छोटे चबूतरे पर फूस का बना है, जो मस्जिद के अहाते के अन्दर ही है। यात्री नित्य हर समय दर्शन करने जा सकते हैं।

भगवत की कृपा से भारत जब स्वतन्त्र हुआ तो भगवत-प्राण राम भक्तों ने श्रीहनुमानजी के सामने अखण्ड रामचरित मानस के परायण का अनुष्ठान किया और रामजन्मभूमि पर असंख्य वैष्णव शैव शाक्तों ने सम्मिलित रूप से रामायण परायण करते हुये भगवान राम का आराधन किया कि वे अब अपनी जन्मभूमिको भी विधर्मीके हाथसे मुक्तकरें और अपने पूर्व

रूप में अवतार लें। फलतः २३ दिसम्बर १६४८ की अर्धरात्रिमें मस्जिद के भीतर भगवान राम प्रकट होगये। तबसे निरन्तर वैष्णव रीति से उनका अर्चन होने लगा है, अब राम अपनी मातृभूमि की गोदमें विराजमान हैं। यह स्थान निर्मोहीअखाड़ा के अधिकार में है।

अयोध्या माहात्म्यमें जन्म भूमिकी महिमा इस प्रकार वर्णित है—

कपिला गो सहस्रं च यो ददाति दिनेदिने।
तत्फलं समवाप्नोति जन्मभूमेः प्रदर्शनात्॥
जन्मान्तर सहस्रेण यत्पापं समुपार्जितम्।
तत्सर्वं नाशमायति जन्मभूमेः प्रदर्शनात्॥

(अ० म० ७-४३)

यहाँ महामन्त्र श्रीरामनाम अथवा षडक्षर मन्त्रराज के जप करनेका विशेष माहात्म्य है। इस स्थानके श्रद्धापूर्वक दर्शन और यात्रा करनेसे मनुष्योंको अलौकिक सुख एवं अपूर्व आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होता है। चैत्र-शुक्ला रामनोमी को विधिवत् व्रत करके जो मनुष्य श्रीजन्मभूमिका दर्शन करता है वह निश्चय ही परमपद का भागी होता है।

सीता-पाकस्थान—(सीता-रसोई) जन्मभूमि के भीतर यह स्थान मन्दिर के वायव्य कोण पर स्थित है। जन्मभूमि का दर्शन करने वाले यात्री इसका भी दर्शन करते हैं।

जन्मस्थान—यह स्थान जन्मभूमि के उत्तर है। जन्मभूमि पर बाबरी मस्जिद बन जाने के पश्चात् आचार्य्य

❀ श्री हनुमानगढ़ी, श्री अयोध्या जी ❀

देवमुरारिजी के शिष्य स्वामी श्रीरामदासजी ने अपना चिमटा गाड़कर आसन जमाया। कुछ दिन बीतने पर यह स्थान जन्म-स्थान के नाम से प्रसिद्ध होगया। इसके पत्थर पर सीतापाक स्थान भी इसका एक नाम खुदा हुआ है।

सीताकूप—जन्मभूमि के अग्निकोण पर ३२ गज की दूरी पर युगयुगान्तरों से स्थित सीताकूप है, जो ज्ञानकूप भी कहलाता है। कहते हैं कि यह दशरथ जी के राजभवन के आंगनमें बना था। श्रीजनक-किशोरी जी के आने पर इसी की पूजा हुई थी। इस कूप का जल पीने से अनेकों असाध्य रोगों की निवृत्ति होती है और ज्ञान प्राप्त होता है। मूल नक्षत्रमें उत्पन्न नवजात शिशु की ग्रह शान्ति-पूजा में इसका जल काम आता है। पास ही में सुमित्रा भवन है; जिसमें लक्ष्मण और शत्रुघ्न जी उत्पन्न हुए थे। उत्तर की ओर श्री भरत जी की जन्मभूमि है; जो कैकेयी भवन के नाम से प्रसिद्ध है।

हनुमानगढ़ी—अयोध्या स्टेशन से उत्तर की ओर हनुमान गढ़ी रोड होकर लगभग २ फर्लाङ्ग जाने पर बाईं ओर एक ऊँचे टीले पर यह परम प्रसिद्ध स्थान स्थित है।

स्थान का मुख्य फाटक उत्तर की ओर है। भीतर आंग में वीरेश्वर भगवान श्रीहनुमान जी का एक पत्थर का विशाल मन्दिर है। कहा जाता है कि बाबा अभयराम जी की साधुता और सिधाईसे प्रभावित होकर नवाब शुजाउद्दौलाने इसे

बनवाया था; और आसफउद्दौला के मन्त्री टिकैतराय ने पूरा किया था। इस मन्दिर में ५०० से अधिक साधु निवास करते हैं। इसका प्रबन्ध चार पट्टियों द्वारा होता है। पट्टियों के नाम इस प्रकार हैं:—१-हरद्वारी पट्टी, २-सागरिया पट्टी, ३-बसन्तिया पट्टी; ४-उज्जयिनियां पट्टी। प्रत्येक पट्टी में एक महान्त होते हैं। प्रधान श्रीमहान्त गद्दीनशीन कहे जाते हैं, जो बारी बारी प्रत्येक पट्टी से चुने जाते हैं। यहां प्रत्येक शनिवार तथा मङ्गलवार को दर्शन के लिये विशेष मेला होता है। कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को श्रीहनुमान जी की जन्म जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई जाती है। मन्दिरमें सुन्दर-काण्ड (वाल्मीकीय अथवा तुलसीकृत) का पाठ करने से मनोवाञ्छित फल की प्राप्ति होती है। दर्शन करते समय यह श्लोक पढ़ना चाहिये:—

अञ्जनानन्दनं देवं जानकीशोक-नाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥

हनुमानगढ़ीकी स्थापना रामानन्दीय वैष्णवों के सातों अखाड़ों तथा अयोध्या के हिन्दू धार्मिक स्थानों की रक्षा के लिए मुसलिम शासन काल में हुई थी। इस कारण वह स्थान साम्प्रदायिक होने के कारण धर्मान्ध मुस्लिमों की आंख में गड़ता रहा। कई वार आक्रमण भी हुए। एक आक्रमण के विषय में एक कविता उद्धृत है।

पच्छिम से मुल्ला एक आया म्लेच्छ बहुत संग लाया।
जा बैठा वह जन्मभूमि में झण्डा खड़ा कराया॥

जमा हुये सब तुर्क शहर के मिलकर गर्व बढ़ाया ।
खोंदेगे हम गढ़ी जायं ।कर; यह मनमें ठहराया ॥
मसजिद रही कदीम हमारी; खोद गढ़ी बनवाया ।
हुआ पुकार शहर मुल्कों में, 'आर साहब' उठ धाया ॥
कर तहकीक तुरुक-हिन्दू कों, सबके दिल की पाया ।
'जान साहब' दिन चढ़े याम भर. ऐहैं हुकुम लगाया ॥
करिहैं वही फैसला तुम्हारा, लिक्खा हमको आया ।
'आरसाहब' औ 'जानसाहब' सब हाकिम मिल समझाया ॥
लड़ो नहीं तुम कहना मानं, हजरत तुम्हैं बुलाया ।
साहब की सुन बात मोलबी गुस्से में बिरुझाया ॥
साधु भये तैयार चलन को, मौलवी कहा न मानै ॥
नहीं जांयगे संग तुम्हारे; हजरत को क्या जानै ।
सुन साहब मोलवी की बातें, मनमें गुस्सा खाया ॥
लड़ो लड़ाई हम भी देखैं, गढ़ी पै हाल पठाया ।
बड़े जोम से तुरत मोलवी; सब तुरकन लै धाया ॥
है आगे हिन्दुन ने घेरा, पग भर बढ़न न पाया ।
भई बरोबर मार दोनों की, खढग खीचकर लड़ते ॥
तुपक; तमंचा, कड़ाबीन, औ गोलिन फूलत झड़ते ।
महावीर के दास बांकुड़े, तिल भर परग न टारैं ॥
जै धुन बोलैं महावीर की, आगे बढ़ बढ़ मारैं ।
फिर हिन्दू मसजिद को घेरा; गुम्बद चढ़कर नागें ॥
कूद कटघरा तोड तुरत लिए, तेग तमञ्चा दागे ।
काटे शीश सयाने क्षत्री सूर्यवंशि चौहाने ॥

कटे भूमि पर मुल्ला सारे बचे न प्रान पराने ।
काट किये खलिहान तुरतही, लोहू चले पनारे ॥
भाग बचे जितने भर तुरकैं, वे सबही अधमारे ।
मास अषाढ़ सुदी तिथि चौदस और शनीचर-वार ।
सम्वत उनइस-सौ बारहमें म्लेच्छ भयो सहार ॥

(९५ वर्षीय वृद्ध पं० श्रीकृष्ण जी पुरोहित कोरियाघाट से सन् १९३४ में प्राप्त)

वशिष्ठकुण्ड—जन्मभूमि के पच्छिम जो सडक दक्षिण से उत्तर को जाती है उसके पश्चिम ओर वशिष्ठकुण्ड है। यहाँ गुरु-पूर्णिमा और ऋषि-पञ्चमी को मेला लगता है। यहां स्नान करने से मनुष्य विद्या-बुद्धि से सम्पन्न होता है। इसके निकट ही माता अरुन्धती जी का और महर्षि बामदेव जी का भी स्थान है; जो जीर्ण-शीर्ण दशा में है।

दुर्गेश्वरजी—कैकेयी भवन के पच्छिम दुर्गेश्वर जी का मन्दिर तथा शिवालय है।

जैन मन्दिर—श्रीदुर्गेश्वर जी के पश्चिम दिगम्बरी शाखा के जैनियों का स्थान है।

श्रीकनकभवन—यह स्थान बडास्थान के उत्तर स्थित है। पहिले यह भग्नावशिष्ट अवस्था में था। विक्रमादित्य के बनवाये हुये प्राचीन कनकभवन को सैय्यद सालार मसऊद गाजी के धर्मान्ध सैनिकों ने तोड डाला था किन्तु आज टीकमगढ़ की महारानी श्रीमती वृषभानुकुवँरि जू देवी ने इस पर बिशाल भवय बनवा दिया है, जो बहुत पुष्ट तथा रमणीक हैं। इसका रहस्य महात्मा श्रीबालकराम विनायकजीने 'कनकभवन-रहस्य'

नामक पुस्तक में वर्णन किया है। यात्रियों को इस स्थान का दर्शन अवश्य करना चाहिये। इसी के अहाते में लाल-साहब (बालरूप भगवान राम) का भी स्थान है। 'लालसाहब' अवधके प्रसिद्ध महात्मा परमहंस श्रीसीताशरण जी के श्रद्धेय अर्चा-विग्रह हैं।

श्रीकनकभवन–मन्दिरमें संस्थापित 'शिलालेखांश विशेषकी प्रतिलिपिः—

द्वापर के आरम्भ में महाराज कुश ने इसका विशेष रूपसे अवतरण किया; फिर मध्य द्वापरमें महाराज ऋषभने संस्करण किया। भगवान श्रीकृष्णचन्द्र ने गत-कलि ६१४ में सानुराग इसकी यात्रा की। महाराज विक्रमादित्यने युधिष्ठिर सं० २४३१ में इसका पुनर्निर्माण एवम् महाराज समुद्रगुप्त ने विक्रम सं० ४४४ में जीर्णोद्धार किया।

मन्दिरके भीतर आंगन में निम्न श्लोक शिला पर अङ्कित है जो विक्रमादित्य के शिलालेख की एक प्रतिलिपि है।

जरासन्धवधंकृत्वा: भागवांस्तीर्थ पावनः।
आगात्सप्तपुरी-मुख्यामयोध्याम्वि चरन्पथि ॥
विश्रामं शिखरे प्राप्य परमामोद संयुतः।
दिव्याङ्गनां तपस्यन्तीं नाम्मां पद्मासनांशुभाम् ॥
शृङ्गामे कनकागारे परया कृपया हरिः।
श्रीसीताराममूर्तिम्वै प्रदाय द्वारकामगात् ॥

चन्द्राग्नवेद पद्मैः परमिति शरदि श्रीमतोधर्ममूर्ते ।
पौषे कृष्ण-द्वितीयामहिसुत दिवसे जीर्णमुद्धृत्यभूयः ॥
श्रीमद्गन्धर्वसेनात्मज नृपतिलको विक्रमादित्य नामा ।
श्रीसीतारामभूर्ति कनकभवनगां स्थापयामासनूनम् ॥
श्रीमन्नृपति विक्रमादित्य द्वारा युधिष्ठिर सम्वत् २४३१

में प्रतिष्ठित ।

रत्नसिंहासन—श्रीकनकभवन के दक्षिण की ओर रत्न-सिंहासन है, जहां श्रीरामचन्द्रजी का राज्यभिषेक हुआ था। मुसलमानों के समय में भी जो मुकद्दमा कहीं नहीं निपटता था, उनका निपटारा यहां होता था। यहां पर नीचे लिखे हुये मन्त्र का जप करते हुये दर्शन करना चाहिये।

"ओं रामाय नमोयेष तारको ब्रह्मरुपकः"।
नाम्ना विष्णोः सहस्राणामधिकोऽयं महामनुः
धूप, दीप, चन्दन, पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करे।
यह मन्त्र भी दर्शन करते समय पढ़ना चाहियेः—
"रामाय रामभद्रायः रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथ नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

लोमशटीला—(रामगुलेला), यह रामकोट के दक्षिण ओर स्थित है।

मत्तगयन्द—(मत्तगजेन्द्र) रामकोटके उत्तरफाटक के रक्षक और नगरके कोतवाल विभीषणजीके पुत्र मत्तगजेन्द्रजी(मातगैंड

का स्थान है यह स्थान पुनव्वर साईं नामक तुरही बजाने वाले के हाथ में चला गया था। लेकिन राजा अमावां ने उसे खरीद लिया और इस्लाम के अधिकार से मुक्त कर दिया, अब वैष्णव रीति से पूजा आर्चा होती है।

मत्तगजेन्द्र के पूर्व द्विविद जी का स्थान है।

विभीषणकुण्ड—मत्तगजेन्द्र के पच्छिम बिभीषण जी का कुण्ड तथा स्थान है कुण्ड का जीर्णोद्धार पं० मोदनाथ नैपाली की प्रेरणा से नैपाल की एक महारानी ने कराया है।

सप्तसागर—मत्तगयन्द के ईशान-कोण पर सप्तसागर नामक तालाब है, जो अब सूख गया है। इसका एक नाम ब्रह्म मानस-तीर्थ भी है। अयोध्या के चक्रवर्ती राजाओं का अभिषेक इसी के जल से होता था। इसमें सातों समुद्रों का जल संचित था। इसके बीच पुरातत्व की बहुत सी वस्तुयें गड़ी हुई हैं, अभी कुछ दिन हुये खोदते हुये वासुदेव भगवान की एक श्याम पत्थर की सुन्दर प्रतिमा मिली है, जो महाराज अयोध्या के सन्निधान में रक्खी है।

दन्तधावनकुण्ड—यह कुण्ड हनुमानगढ़ी के पूर्व दक्षिण से उत्तर जाने वाली सड़क से मिली हुई जो सड़क पूर्व को जाती है, उसके बायें हाथ पर बना है। कोई कहते हैं कि यहां पर श्रीरामचन्द्र जी ने दातून किया था और कोई कहते हैं कि भगवान बुद्ध ने एक बार अपनी दन्तधावन गाड़ दिया था जो

अंकुरित होकर बड़रूर वृक्ष होगया। पश्चात् यह बोधि वृक्ष नाम से प्रसिद्ध हुआ. इसकी सूखी लकड़ी काट कर चीन, जापान, लङ्का आदि देशों को भेजी गई। यहां पर आश्विन कृष्ण दशमी को गङ्गातरण वाली रामलीला होती है और कार को शरद्-पूर्णिमा को शेषशायी भगवान की झांकी होती है।

तुलसीचौरा—यह स्थान दन्तधावनकुण्ड के ईशान कोण पर सड़क के पश्चिम एक चबूतरे पर स्थित है। यह वही पवित्र तम भूमि है जिसे विश्वविख्यात विश्वत्राण, हिन्दूजाति-जीवन, हिन्दी साहित्य-मौलिमणि एवं सनातन धर्म-प्राणस्वरूप श्रीराम चरितमानस को जन्मभूमि होने का अपूर्व गौरव प्राप्त है। भगवान के वाङ्मय रूप श्रीरामचरितमानस का भी अवतरण या मङ्गलारम्भ यहीं पर उसी चैत्र शुक्ला नवमी को हुआ था जिस दिन स्वयं उनका आविर्भाव हुआ है, सब योग; लग्न; ग्रह, मुहूर्त भी वे ही थे। प्रत्येक शुक्ला सप्तमी को साधारण और श्रावण शुक्ला सप्तमी को विशेष रूपसे श्रीतुलसी जयन्ती मनाई जाती है। कथा-कीर्तन तथा सत्संग होता है। रामायण की शंकाओं का समाधान होता है।

(श्रीतुलसीचौरास्थान) दन्तधावन कुण्डके महान्तकी वैयक्तिक सम्पत्ति थी। किन्तु गोस्वामी तुलसीदासजीकी सार्वभौतिक ख्याति से प्रभावित होकर गोलोकवैकुण्ठवासी प्रातःस्मरणीय महाराज श्रीजयकृष्णाचार्यजी ने श्रीतुलसीचौरा ट्रस्टकी स्थापना

सन १८५४ में करके इसकी रजिष्ट्री करवा दिया और अपना स्वामित्वका अधिकार हटा लिया। तुलसी चौरा पर विराजमान श्रीगोस्वामी जी की मूर्ति की सेवा पूजा स्थान दन्तधावनकुण्ड की ओर से पूर्ववत होतो है।

श्रीतुलसी चौरा समिति ट्रस्टडोड के अनुसार यहां उद्यान, (पार्क) पुस्तकालय, वाचनालय, अध्ययन केन्द्र अनुसन्धान केन्द्र, प्रवचन भवन आदि का निर्माण उत्तर प्रदेश सरकार ने पांच छः लाख रुपया लगा कर बनवा दिया तथा गोस्वामी जी की विशाल प्रतिमा को एक मन्दिर में प्रतिष्ठित करने का सुयश कलकत्ता के श्री मँगनीराम रामकुमार बाँगड़ चेरी टेबुल ट्रस्ट ने लिया है! मार्ग शीर्ष कृष्णा द्वितीया २०२६ विक्रमी २६ नवम्बर १९६९ को मन्दिर निर्माण का शिलान्यास हुआ है। श्रीयुत बांगड़ परिवार ने धार्मिक जगत की एक बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति की है।

इस स्थान कीं महिमा से सम्बधित श्री मोहन साईं जी की मार्मिक कविता उद्धृत करने का लोभ मैं नहीं संवरण कर सकता—

'ख्याले' बहरे-शिकस्त

अवधकी भूमी पवित्र सब है, पवित्रतम उसमें 'श्रीतुलसी चौरा।
तवाफ करते हैं रोज जिसका, बिरञ्चि नारद; महेश, गौरा॥
वह अजब घड़ी थी कि जिस घड़ी वह दरख्त बटका उगा यहां।

उसी शबमें बढ़के बुलन्द शुद, उसे कैसे कोई करे बयां॥
हैर हुए सब देखकर कुदरत इलाही दर जहां।
न खुला मुअम्मा किसी से कुछ, पोशीदा असारारे निहाँ।
सुना न देखा किसीने पहले, बनादिया इसने सबको चौरा॥

(१)

जमाया आसन उसीके नीचे, प्रसिद्ध मुनि योगिराज जी ने।
वह जानते मर्म भीतरी थे। बता दिया था उन्हें किसी ने॥
यहां पै काशी से जब गोसाईं पधारे श्रीराम रस में भीने।
सुनाया आदेश अपने गुरूका उन्हें ही सौंपो तब उस यतीने॥
जला के तन योग-अग्नि में तब सिधारा गुरु पाद-पद्म भौंरा।

(२)

लगी जब इकतीसी रामनवमी गोसाईं जी ने कलम उठाई॥
उछाह राम विवाह तैंतिसं समाप्ति तिथि मानसी सुहाई।
हुई जो पूजा की धूम; सुरगण ने राम गाथा पै थी चढ़ाई॥
सुदिव्य मणि तीनशुचि अलौकिक सुघरता जिनकी कही जाई।
खचित था उन परं समेत परिकरके रामजीका शबीह औरा॥

(३)

थी एक पर विष्णुजी की झांकी व दूसरे पर थी रामसिय की।
उन्हींकी पूजा वहाँ पै होती, चलाई मानों गोसाईं जियकी॥
बना दिया मिर्जा मानसिंहने, फरश जमुर्रद व छत्र डियकी।
बहुत दिनोंतक चहल-पहलथी पलट गया फिर समयका दौर॥

(४)

चढ़ा था शैतान सूबाके सिर किं;ताःज पोशीका सामां जोड़ा ।
उपाट कर फर्श तख्त साजा, दुखाके दिल व रुला के छोड़ा ॥
वह तख्त पर बैठने न पाया, पहुँच के नौरंग ने जान मारी ।
गुनाह वे जज्जत उसने चक्खा, किंयेका फल हाथों हाथधारी॥
मुगलके घर रत्न फर्श छतरी पहुँच गये दिल्लियां पिथौरा ॥

(५)

रहा सहा वृत्त वेदिकायुत जो था ही जिन्दा-गवाह सबका ।
बचा न वह भी;बचे तो कैसे:कि हिलागये जबकि सातों तबका॥
यह कैसा संवत था वे वफा कि था नाम वाहर खवास रबका ।
व जन्म त्रेताका कैसे माने; जो त्तयकरीं तिथि हमें हुई श्रा ॥
अब ईट की वेदिका बची है, उसो पै सिर हम पटकते धौरा ।

(६)

हे पाक वट ! मैं तो खाकतनहूँ, बहुत ही नापाक वजिसे दामन ।
मगर तुम्हारेहि साया में तो हुआ है मेरा हमेशा पालन ॥
इसी से छूने का हक है हासिल; क्षमा करो पितृदेव भगवने ।
कपीश के कुण्ड में सिपारूँ; तुम्हारा तन कि बने न ईंधन ॥
तुम्हारी आसक्ति घेरती है, हृदय हमारा मचा के हौरा ।

(७)

तुम्ही तो त्रेताके सोमवट हो, तुम्हीं हो द्वापर के वंशीवट भी ।
तुम्हीं बने कलिमें बोधिबिरवा, व मानसी-वट यहां प्रकट जो ॥
तुम्हीं अछैवट, तुम्हीं अचलवट, तुम्हींहो कैलाश-तरु-मुकुट भी ।

तुम्हींहो नट-राज सुवट-वपुषमें, तुम्हींहो मेकलसुताके तट भी ॥
तुम्हारा गुन गावे साईं मोहन,बने न जबतक अजलका कौरा ।

—:❀:—

श्री श्रावण शुक्ला सप्तमी को यहां तुलसी जन्म जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई जाती है। रामनवमी की सन्ध्या को तुलसी साहित्य पर सत्संग एवं शंका समाधान होता है। ख्यात नामा रामायणी इस स्थानकी धूलमस्तकपर तिलकलगाते हैं। रामविवाहकी लीला विवाह पंचमीके अवसर पर होती है।

मणिपर्वत—यह उन चार पर्वतोंमें है जो दिव्य अयोध्या की चारों दिशाओं में अवस्थित हैं। यह पुरी (श्रीअयोध्याजो) और स्टेशनके दक्षिण पड़ता है। श्रीजानकीजीका क्रीड़ाशैल है॥ यहां पर महात्मा बुद्धजी ने काम को जीतने के लिये ६ वर्ष तक प्रत्येक वर्षा ऋतु में कठोर तप किया था। यह केवल मणियों का ही पहाड़ था। पर्वत के पश्चिम भाग में शेष जी का स्थान है, जिसे मुसलमान शीश-पैगम्बर कहते हैं।

मणिपर्वत का क्षेत्र जङ्गल का एक दृश्य है। बड़ी बड़ी दुर्लभ जड़ी बूटियां यहाँ प्राप्त होती हैं। कहा जाता है :धवल गिरि का यह टुकड़ा है॥

लच्मण शक्ति के अवसर पर हनुमान जी सुखेन वैद्य के बताने पर धवल पर्वत लिये जारहे थे। भरतजी ने आक्रमणकारी समझकर वाण मारा; हनुमान जी गिर पड़े। तभी यह भाग टूटकर गिर पड़ा था।

यहां पर मणि वाले सर्प भी रहते हैं। सभी ऋतुओं में पर्वत के ऊपर शिखर पर चढ़ कर देखने से अयोध्या की वास्तविक प्राकृतिक शोभा का आनन्द मिलता है।

यहां श्रावण शुक्ला तीज को झूलनोत्सव का बड़ा सुन्दर मेला होता है। इस दिन श्रीअयोध्या के प्रत्येक मन्दिर के ठाकुर जी विमानों पर चढ़कर यहां आते हैं और झूला झूलते हैं।

तिलोदकीगङ्गा—यह परम प्राचीन नदी अयोध्याके दक्षिण भागमें अवस्थित है; इसके उद्गम स्थानका इस समय पता नहीं चलता, किन्तु वर्षाऋतुमें कुछ रूपरेखा प्रकट होती है, यह नदी मणिपर्वतको पश्चिम, उत्तर और पूर्वओरसे घेरतीहुई श्रीसरयूजींमें मिल जाती है। वर्षाऋतुमें किनारे २ जानेसे बीस पचीस मील तक की लम्बाईका पता चलता है और वहां तक वह तिल्योदकी नामसे प्रसिद्ध है। प्राचीन लोगोंके मुखसे सुना जाता है कि, श्रीमती माता कैकेयीके विवाहमें जो घोड़े दहेज में मिले थे, उन्हें स्नान करानेके लिए यह नदी केकय देश से आई थी। अब भी भाद्रपद-कुशोत्पादिनी अमावश्या को, जिस दिन इसमें स्नानका पर्वहै, मनुष्योंके स्नानके पूर्व घोड़े नहलाये जाते हैं। विश्वास यह है कि इसमें नहलाये हुए घोड़ोंको किसी प्रकारका रोग नहीं होता है। इस दिन लोग तिलोदकी गङ्गामें स्नान करते हैं और अपनेको सब पापोंसे मुक्त करते हैं।

विद्यादेवी—मणपर्वतके पूर्व विद्याकुण्डके नैऋत्य दिशामें

विद्यादेवीका मन्दिर है। कहा जाता है कि भगवान राम का विद्यारम्भ यहीं हुआ था। इसी स्थान पर पुष्य-मित्रने अपनी विजयकी स्मृति में विद्यादेवी की स्थापना की थी जैसाकि एक शिलालेख की पंक्ति से ज्ञात होता है—

स्थापित पुष्पमित्रेण विजयादेय मन्दिरम्।

विद्यादेवीके जीर्णोद्धारके लिये स्थानीय व्यक्तियोंने विद्या देवी सेवासमितिकी स्थापनाकी है। जिसके प्रयाससे बसन्तपञ्चमी को सांस्कृतिक कार्य-क्रम सम्पन्न होते हैं।

विद्याकुण्ड—मणिपर्वत से मिला हुआ पूर्व दिशामें सड़क के पश्चिम ओर स्थित है। यह महाविद्याओं का कुण्ड है इसके पूर्व की ओर लश्करी वैष्णवों का मूलस्थान है। कुण्डमें आश्विन शुक्ला-अष्टमी को स्नान करने से विद्याओं की प्राप्ति होती है।

खर्जुकुण्ड—(खजुलीकुण्ड) अयोध्यासे दर्शन-नगर जाने वाली सड़क के पूर्व ओर मणिपर्वत के अग्निकोण पर स्थित है। रविवार तथा मङ्गलवार को इसमें स्नान करने से मनुष्य चर्म रोग से मुक्त हो जाता है। दर्शननगर के नारायण साहुने इसमें एक ओर घाट बनवाया है।

सीताकुण्ड—विद्याकुण्डके पूर्व ओर स्थित है यह अशोक बन के मध्य में श्रीजानकीजी के विहार के हेतु प्रकट हुआ था। यहाँ पर एक गुप्त सोमवट भी है जो दिव्यचक्षु गम्य है। वैशाख शुक्ला श्रीजानकीनवमी को यहां पर स्नान का मेला लगता है।

अग्निकुण्ड—विद्याकुण्ड के ईशानकोण पर स्थित है। कुण्ड बड़ा सुन्दर था, अब सूख गया है।

स्वर्णखनिकुण्ड—(स्वर्णखर) बाबा रघुनाथदास जी की वर्तमान छावनी के उत्तर है। कौत्समुनि की याचना पर वरतन्तु ऋषि की गुरुदक्षिणा के हेतु राजा रघु के आदेश और अनुशासन से कुवेरने सोने की वृष्टि यहीं की थी। वरतन्तु ऋषि के गोत्रज ब्राह्मण परिवार अभी भी आस पास बसे। यहाँ पर बिजयदशमी को स्नान करने का माहात्म्य है।। नागपञ्चमी को गुड़िया पीटने का सुन्दर मेला लगता है। इसके किनारे ओइल महेवा राज्य के दो विशाल मन्दिर बने हैं। पूर्व ओर देवीजीका मण्डप है।

सिद्धेश्वरनाथ—श्रीरघुनाथदासजी की छावनी के पश्चिम सिद्धेश्वरनाथ का एक छोटा सा शिवालय है। महर्षि वरतन्तुजी के आराध्य देव का यह शिवालय है । स्वामीनारायण धर्म को 'वचनामृत' नामक पुस्तक में एक विचित्र घटना उल्लिखित है—

मैं (स्वयं श्री घनश्याम जी महाराज) यहां जिस समय शिवालय में भगवान की आराधना कर रहा था, उसी समय एक कायस्थ भीं यहां आया और व्रत किया। व्रत करके एक पैर पर खड़ा रहता और यह प्रार्थना करता कि, उसका अगला जन्म (लम्वोकर्ण) गदहे का हो। स्वामीनारायण-धर्म के माननेवाले यात्री नित्य यहाँ दर्शन करने आते हैं। यहाँ पर आराधना

करके अनेक लोगों को मनोवाञ्छित फल की प्राप्ति हुई है।

प्राचीन लोगोंका अनुभव है कि इस स्थान पर पढ़ा हुआ पाठ कभी भूलता नहीं। छात्रोंको परीक्षोपयोगी प्रश्नों के उत्तर स्मरण हो जाते हैं और जो छात्र यहाँ बैठ कर पढ़ता है वह परीक्षा में अवश्य उत्तीर्ण होता है।

सुग्रीवकुण्ड—यह तुलसीचौरा के पूर्व स्थित है। खेद है, म्युनिस्पैलटी ने इसे कूड़े से पटवा दिया था। अगस्त १९६४ से कुण्ड का पत्थर का साइनवोर्ड भी कोई उखाड़ ले गया।

क्षीरेश्वरनाथ—फैजाबादसे आनेवाली सड़ककेपूर्व श्रीराम अस्पताल के सामने क्षीरसागर है और अस्पताल के अग्निकोण पर क्षीरेश्वरनाथ महादेव का मन्दिर है। कहते हैं क्षीरेश्वर जी माता कौशिल्याजी के स्थापित किये हुए हैं। इनकी बड़ी महिमा मानी जाती है।

अयोध्याके धनीहलवाई स्वर्गीय मोहनलालजी ने इसका जीर्णोद्धार कराया है।

जमदग्निकूप—गायत्रीं भवन के अहाते में अग्निकोण पर एक कूप है, जो यमदग्निकूप के नाम से प्रसिद्ध हैं। पहिले इसका जल पीने वाले प्रायः अन्धे हो जाते थे, अब भी पीने से रतौंधी अवश्य हो जाती है। कहते हैं किसी प्रकार से यह शापित है।

धनयज्ञकुण्ड—यह कच्चा कुण्ड है, उसकी दशा बड़ी शोचनीय है। लोगों का यह विश्वास है कि यदि श्रीसरयूजी का जल बह कर इसमें मिल जाय तो सारी अयोध्या जलमग्न हो जाय।

देवकाली (छोटी)—राजगोपाल पाठशालाके सामनेसे स्वर्गद्वार जानेवाली सड़क के पश्चिम देवी का एक छोटा सा मन्दिर है। नवरात्र में विशेष रूप से पूजा होती है। बड़ीदेवकाली अयोध्या से दूर होनेके कारण श्रीजानकीजीके लिये दर्शन करने के हेतु इनकी स्थापना महल के उत्तर फाटक के पूर्व ओर की गई थी।

जाल्पा या जालपादेवी—फैजाबाद से अयोध्या आने-वाली सड़क पर गुरुकुल के सामने उत्तर एक छोटा सा मन्दिर है। नवरात्र में यहां पूजा होती है। इन्हे बन्दी देवी भी कहते हैं।

बड़ी देवकाली—यह स्थान अयोध्या से नैऋत्यकोण पर तीन मील की दूरी पर है। यहां पर होलीके आठवें दिन 'आठौं' का बड़ा मेला होता है। प्रति सोमवार तथा शुक्रवार को देवी के दर्शन के लिये बहुत से लोग जाते हैं। मन्दिर के सामने एक पक्का तालाब बना हुआ है। देवीजी के दर्शन से लोगोंका प्रायः कल्याण हुआ करता है। देवी जी महाकाली का एक रूप है।

भरतकुण्ड—पुरी के नैऋत्य कोण पर लगभग ७ कोस

पर भरतकुण्ड है, यही नन्दिग्राम भी है। एक सुन्दर कमलों से खिला हुआ विशाल सरोवर है। श्रीरामचन्द्रजी के वन चले जाने पर उनकी पादुका की आज्ञा से भरतजी यहीं रहकर प्रजा पालन करते थे; इसकी महिमा अयोध्या माहात्म्यमें इसप्रकार है।

मन्वन्तर सहस्त्रैस्तु काशीवासेन यत्फलम् ।
तत्फलं समवाप्नोति नन्दिग्रामस्य दर्शनात् ॥
तत्रस्नानं महत्पुण्य प्रमोदानन्द निर्मलम् ।
तत्रस्नानं तथा श्राद्धे पितृनुद्दिश्य कुर्वतः ॥
पितरस्तस्य तुष्यन्ति, तुष्टाः स्युः सर्वदेवताः ।
स्वर्णं चान्नं विधानेन दातव्यं च द्विजन्मने ॥
(आ०भा० २४-६)

अर्थात्—गयामें श्राद्ध करनेसे, प्रयागमें माघस्नान करने तथा काशी में हजारों वर्ष गङ्गा स्नान करने से जो फल प्राप्त होता है, वह फल नन्दिग्राम के दर्शन मात्र से प्राप्त होता है। यह एक पुण्यश्लोकचरित राम-विरही की तप स्थली है, जो कुछ महिमा कही जाये थोड़ी है। चैत्र कृष्ण १४ को इसकी यात्रा होती है।

सूर्य्यकुण्ड—पुरीसे तीनमील दक्षिण सूर्य्यकुण्ड (बालार्क कुण्ड) है, जिसका जीर्णोद्धार राजा दर्शनसिंह ने कराया था। यहाँ भाद्रपद तथा पौष मास में रविवार को बहुत बड़ा स्नान का मेला लगता है। इसके पूर्व प्राचीन सूर्य्यकुण्ड है। पश्चिम

दर्शन नगर बाजार बसा है।

वासुदेवघाट—नयाघाटके पूर्व आगे चलने पर वासुदेवघाट मिलता है। पहिले प्रलयमें मनुजी को भगवान मत्स्य-नारायण का दर्शन यहीं हुआ था। यहीं पर महात्मा रघुनाथदास जी के गुरु श्रीमौनीजी का स्थान है। इसी मन्दिर में वासुदेव जी की प्रतिमा स्थापित है।

धर्महरि—(धर्मराज) वासुदेवघाट के पश्चिम धर्महरि सहित चित्रगुप्त का मन्दिर है। सरयू स्नान करके जो पवित्र मनसे धर्महरि का दर्शन करता है, वह सब पापों से छूट जाता है। यहाँ दान, हवन और जप करने का तथा ब्राह्मण भोजन कराने का माहात्म्य है। आषाढ़ शुक्ला एकादशीको दर्शन करने का बड़ा माहात्म्य है यहां कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी से कार्तिक शुक्ला द्वितीयातक दर्शन करनेसे विशेष फल होताहै यमद्वितीया को चित्रगुप्त मन्दिर के प्रबन्धसे कायस्थों की सभा होती है। और बच्चे लोग ड्रामा भी खेलते हैं।

त्रेतानाथ—रूपकला मन्दिर के दक्षिण त्रेतानाथ जी का मन्दिर है, यहाँ प्रत्येक एकादशी को ही ठाकुरजीका दर्शन होता है। कहा जाता है कि, यहां मूल मूर्तियां जाम्बूनद सोने की बनीं थी। इसके सम्बन्धमें एक कथा इस प्रकार है :—

कुलके भागवत राजा राघवेन्द्रदास कहा करते थे कि अयोध्या सोने की है। परन्तु मन्त्री को विश्वास नहीं होता था

कि अब भी वह ऐसी ही है। एक बार राजा का कोई मनुष्य श्रीअयोध्या जी की यात्रा के लिये प्रस्थान करनेवाला था: उससे राजा ने कहा कि वहां (अयोध्या)से एक ईंट वस्त्र से लपेट कर लेते आना परन्तु रास्ते में कदापि खोलकर न देखना और न दिखाना, नहीं तो दण्ड के भागी होगे। जब वह ईंट ले गया और दरबार में उपस्थित किया; तब राजा ने मन्त्री को उसे खोलने के लिये कहा। खोलने पर ईंट अग्नि के समान प्रकाश पूर्ण निकली। उसी ईंटकी मूर्ति बनवाकर अयोध्याजी में स्थापित की गई और त्रेता की विभूति का एक चमत्कार होने के कारण उस श्रीविग्रह का नाम त्रेतानाथ रक्खा गया।

नागेश्वरनाथ—घाट के दक्षिण ओर नागेश्वरनाथजी का पत्थर का एक सुन्दर मन्दिर है। इसे महाराजा कुश ने स्थापित किया था। कहा जाताहै कि महाराजा कुशका वलय (करभूषण) स्नान करते हुये श्रीसरयूजी में गिर गया था, जिसे एक नाग-कन्या ने पाया और वह उसे उठा ले गई। खोजने पर जब वह नही मिला तब कुशजी ने कुपित होकर अग्निबाण का सन्धान किया, जिससे जल जन्तु विकल होने लगे। तब नागराजने वह भूषण लाकर इन्हें दे दिया और अपनी कन्या का पाणिग्रहण करने की प्रार्थना की। उसी समय भगवान शंकर भी प्रकट हुए और अपने भक्त नागराज को कुशजी से मिला दिया। कुशजीने नागकन्याको भी स्वीकार किया और इस घटनाके स्मरणमें उस

उस स्थल पर नागेश्वरजी कीं प्रतिष्ठा की। यहां पर "ॐनमः शिवाय" मन्त्रका जप करने से मनोवाञ्छित फल प्राप्त होता है।

अयोध्यामाहात्म्यमें लिखा है :—

"स्वर्गद्वारे नरः स्नात्वा दृष्ट्वा नागेश्वरं शिवम्।
पूजयित्वसुविधिवत् सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥

फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी को (शिवरात्रि पर) यहां से श्रीशंकरजीकी बारात बड़े समारोहके साथ निकलती है। प्रत्येक पुरुषोत्तम मास (मलमास) में पूजन के लिए सैकड़ों पण्डित यहां आते हैं। नागेश्वरजी द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में है।

कालेराम—नागेश्वरनाथके मन्दिरसे सटा हुआकालेराम-जी का मन्दिर है। इस मन्दिर में काले पत्थर कीं वे प्राचीन मूर्तियाँ हैं। जो पहिले जन्म-भूमिमें प्रतिष्ठित थीं। यहाँ प्रायः महाराष्ट्र सज्जनोंका कीर्तन हुआ करता है।

चन्द्रहरि—नागेश्वरनाथके पच्छिम चन्द्रहरि महादेवका मन्दिर है। इस मन्दिरके अन्दर पचाँसों शिवलिंग स्थापित हैं। यहाँ के दर्शन से स्त्रियों को पुत्रकी प्राप्ति और चान्द्रायण-व्रतका फल प्राप्त होता है।

लक्ष्मणकुण्ड— बढ़ईघाटके पच्छिम लक्ष्मणकुण्ड है, जिसे लक्ष्मणघाट तथा सहस्रधारा भी कहते हैं। मन्दिरमें लक्ष्मण जी की प्राचीन मूर्ति स्थापितहै। अदालतों में कसम खाने वाले

यहां लाये जातेहैं। यहाँ पर झूंठी कसम खाने वालों का निश्चय ही सर्वनाश हो जाता है। नागपञ्चमी को यहाँ स्नान का मेला होता है। लाग दूध-लावा चढ़ाते हैं।

पापमोचनघाट-लक्ष्मणकिला के आगे पापमोचनघाट है, यहाँ स्नान करनेसे मनुष्य सब पापोंसे छूट जाता है।

राजघाट-ऋणमोचनघाट के आगे सिद्धाश्रमका प्रान्त है। जहां आज-कल मुसलमानों का अधिकार है, जिसे लैदवाड़ा कहते हैं। सिद्धाश्रम राजघाट से सम्बद्ध है।

ऋणमोचनघाट—इसकी महिमा अयोध्या-माहात्मय में ऐसी लिखी है:—

श्रद्धया परया तत्र कुर्यात् स्नानं विशेपत: ।
माघ-कृष्णचतुर्दश्यां तत्र स्नान प्रशस्यते ॥
दानश्च मनुजै:कार्य्यः सर्वपाप—विशुद्धये ।
अन्दया हि कृते स्नाने सर्व पापक्षयो भवेत ॥

अर्थात यहां स्नान; दान करने से मनुष्य सब पापों से तथा तीनों ऋणों से मुक्त हो जाते हैं यहां पर लोमशऋषि अपने ऋणों से मुक्त हो गये थे। इसके दक्षिण राजघाट; कैकेयीघाट कोशल्याघाट, सुमित्राघाट, और ब्रह्मकुण्ड क्रमानुसार है।

ब्रह्मकुण्ड पर सिक्खों का स्थान है॥ स्थान के सामने पक्के चबूतरे पर एक विशाल लोहे का स्तम्भ गड़ा है। यह स्तम्भ उसी स्थान पर है जहां पर गुरुजी बैठेथे। इसके दक्षिण विष्णुहरिजी का स्थान है।

वासुकीकुण्ड—स्वर्गद्वार में वासुकीकुण्ड है। इस समय इस पर मस्जिद बनी है। इस कुण्ड में स्नान करने से सब प्रकार के विष शान्त हो जाते थे।

❀ श्रीसरयूजी ❀

—: श्रीसरयूजीकी उत्पत्ति कथा :—

सृष्टि के आदि में जब भगवान की नाभि से उत्पन्न कमलनाल पर बैठे ब्रह्मा ने सोचा कि विना तप किए मैं सृष्टि की रचना नहीं कर सकूँगा, तव पहिले उन्होंने विष्णु भगवान का ध्यान किया। वड़ी आराधना-पूजा के पश्चात विष्णु भगवान साक्षात प्रकट हुए और ब्रह्माजी की इस अपार निष्ठा एवं अपने में अगाध प्रेम देखकर गद् गद् हो गये। उनके नेत्रों में प्रेम के जल उमड़ आये। उन पवित्र प्रेम के जलविन्दुओं को गिरते देख कर ब्रह्माजी ने अपने कमण्डलु में धारण कर लिया। पश्चात इसके रखने के लिए मानसिक-सरोवर का निर्माण किया, जिसका स्थूलरूप मानसरोवर हुआ, उसी में इस जल को संचित कर दिया। इस भांति हरि-नेत्रजाम्वु को मानस-सरोवर में रक्खे हुये सुदीर्घ-काल वीत गये। उसके पश्चात अयोध्यामें मनु नामक आदि राजा हुए, जिनके पुत्र इक्ष्वाकु थे। नगर में कोई सरिता न होने के कारण राजा ने श्रीगुरु वशिष्ठजी से एक नदी के प्रवन्ध करने की प्रार्थना की। मुनि वशिष्ठजीने अवसर अच्छा देखा और शीघ्र ही ब्रह्माजी के पास चल दिये। वहां जाकर तप करके ब्रह्माजी को प्रसन्न किया और सरयूजी को लाने आज्ञा प्राप्त की। अतः ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को श्रीसरयूजी मानसरोवर सेनिकलीं और भारत की पवित्रतम भूमि पर अवतरित हुईं।

अयोध्या को तीन ओर (पश्चिम, उत्तर पूर्व) घेरे हुये में । श्री सरयू जी के अनेकों नाम हैं । भगवानके नेत्रों से उत्पन्न होनेसे नेत्रजा, चिदानन्द वारिणी होने से 'ब्रह्मानन्दद्रव', मानसरोवर में रहने और इससे निर्गत होनेसे 'सरयू' और मानसनन्दिनी तथा वशिष्ठ जी के द्वारा आने से 'वाशिष्ठी' उनका नाम पड़ा।

श्रीसरयू—स्नान का फल अयोध्या-माहात्म्य में इस भांति लिखा है:—

मन्वन्तर सहस्रैस्तु काशीवासेन यत्फलम् ।
तत्फल समवाप्नोति सरयू-दर्शने कृते ॥
प्रयागे यो नरोगत्वा मास द्वादशकं वसेत् ।
तत्फलं समवाप्नोति सरयू-दर्शने कृते ॥
गया-श्राद्ध च कुर्य्यात् पुरुपोत्तम्-दर्शनात् ।
तत्फलादधिका प्रोक्ता कलौ दशरथीपुरी ॥
मथुरायां कल्पमेक वसते मानवो यदि ।
तत्फलं समवाप्नोति सरयू दर्शने कृते ॥
या गतिर्योगयुक्तानां वाराणस्यां तनुत्यजाम् ।
सा गतिस्नान-मात्रेण सरय्वां हरिवासरे ॥

श्रीसरयूजी साक्षात् जलस्वरूप ब्रह्म हैं:—
"जलरूपेण ब्रह्मैव सरयू मोक्षदा सदा"
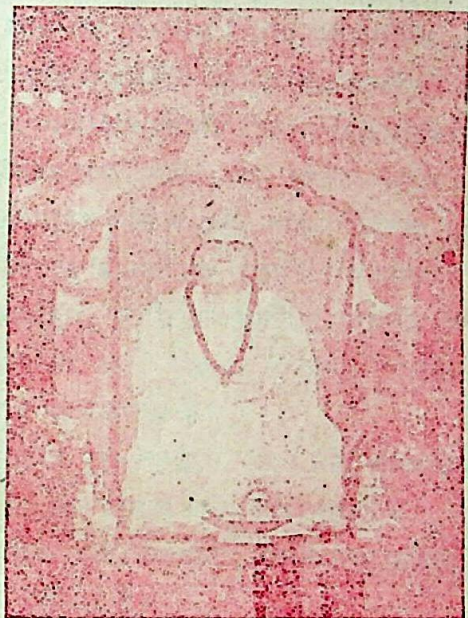
-:ॐ:-

सिद्धगिरि मठिया

नयाघाट श्री अयोध्या जी

❀ अयोध्यासे फैजाबाद तक श्रीसरयूके घाट ❀

श्रीसरयूजी के किनारे प्रथम श्रीस्वर्गद्वारघाट की उत्पत्ति हुई। भगवान शङ्करजी पार्वतीजी से कहते हैं:—

स्वर्गद्वार-समंतीर्थं न भूतं न भविष्यति।
सत्यंसत्यं पुनः सत्यं नासत्यं मम भाषितम्॥
स्वर्गद्वार-समंतीर्थं नास्ति ब्रह्माण्ड-गोलके।
दिव्यानपि च भौमानि तीर्थानि सकलान्यपि॥
प्रातरागत्य तिष्ठन्ति तत्र संस्नुत्य पार्वति।
तस्मादत्र प्रकर्तव्यं प्रातः स्नानं विशेषतः॥
यद् यद् कामयते तत्र सदाप्नोति स मानवः।
स्वर्गद्वारे परासिद्धिः स्वर्गद्वारे परागतिः॥

यहां स्नान करके गोदान; अन्नदान, ब्रह्मभोज तथा वस्त्रदान करने का माहात्म्य है।

वर्गद्वारके पूर्व—चन्द्रहरि घाट (जहाँ चन्द्रहरिनाथ जी का मन्दिर है) नागेश्वरनाथ घाट, अहिल्याबाई घाट, (आधुनिक) श्रीरूपकला घाट; नयाघाट (प्राचीन नाम धर्मराज घाट) वासुदेवघाट; रामघाट है।

अहिल्याबाई घाट—रूपकलाघाटके पश्चिम अहिल्याबाई घाट है। यहाँ एक मन्दिर भी थे जो इन्दौर राज्यके प्रबन्धमे है।

जटारघाट—अहिल्याघाटके पश्चिम जटार का मन्दिर है। यहां पर एक मौनीजी रहते थे, जो स्वरोदय मार्ग के सिद्ध महात्मा थे।

स्वर्गद्वारके पश्चिम वढ़ईघाट (आधुनिक) लक्ष्मणघाट (सहस्रधारा), लक्ष्मणकिला; पापमोचन घाट (गोलाघाट ऋणमोचन घाट; राजघाट, कैकेयीघाट; कौशल्याघाट, सुमित्रा घाट; वृह्मकुण्ड, प्रह्लादघाट, विष्णुहरि, चक्रतीर्थ। इसके दक्षिण फैजाबाद में रामललाघाट, निर्मलीकुण्ड, यमस्थलाघाट गुप्तारघाट आदि प्रसिद्ध घाट हैं।

—:०:—

सिद्धमहात्मा

श्रीसरयूजीकी वारिधारा में स्नाना करने से अनेकों मनुष्यों को सिद्धि प्राप्ति हो चुकी है, और उन्हें भगवत् प्राप्ति भी होगई है। यहां कुछ महात्माओं की नामावली और संक्षेप में उनका जीवन-चरित्र दिया जाता है।

श्री रघुनाथदास जी, श्री पण्डित उमापति तिवारी, श्रीयुगलानन्दशरण जी तथा वावा माधौरामजी आदि सन्त इतने सिंद्ध और प्रसिद्ध हैं कि ये आधुनिक अयोध्याके निर्माता कहे जा सकते हैं। परन्तु यह स्वीकार करना पड़ेगा कि जन्म स्थानके प्रवर्तक महात्मा गूदड़ वावा (श्रीरामदासजी) ने ही इसके पथ का कण्टकोद्धार किया था। उन्हें लोग "शाहन्शाह आशिकान" कहते हैं। इनके अतिरिक्त वावा वनादास परमहंस मामा प्रयागदासजी, परमहंस रामसहायदासजी दिगम्बर!

इन सिद्ध महात्माओं में सबसे प्रथम श्रीवावा रघुनाथदासजी महाराज का स्थान आता है। आप श्रीसरयूजीके इतने

कृपापात्र थे कि जब कभी भण्डारामें घृत कम होता था तो सरयूजी से उधार घृत मांगते थे। सरयूजल भरकर आता था और घृत हो जाता था। भण्डारा में जब घृत आ जाता थो तो फिर उधार घृत वापस कर देते थे।

इसी कोटि के सिद्धों में विद्याभास्कर श्रीयुत पण्डित उमापतिजी त्रिपाठी 'कोविद' का नाम गर्वपूर्वक लिया जाता है। आप वशिष्ठजीके भावके वात्सल्यरसाविष्ट महात्मा थे। आप अपनेको श्रीरामजीका गुरू मानते थे और आजन्म यही भाव निवाहा, यहां तक कि अपने गले की माला श्रीरामजीको पहनाते थे।

स्थानाभावके कारण सम्पूर्ण सिद्धों का वर्णन इसके अतिरिक्त किसी अन्य ग्रन्थमें वर्णन करना अच्छा होगा। यहां पर कुछ के केवल नाम दिये जाते हैं। इनके अतिरिक्त अनेकों मुसलमान सिद्ध भी यहां हुये हैं, जिनका भी नाम लिखना परमावश्यक है। वे महात्मा ये हैं:—

मुसलमान सन्त—कलन्दरशाहजी; जलालुद्दीनशाहजी, 'विशाली'।

——

—: इतिहास :—

नवीन स्थिति तथा प्राचीन संस्कार

यद्यपि पुराणों में श्रीअवधकी महिमाका वर्णन युगान्तरों से होता चला आया है, किन्तु उसका इतिहासिक रूप इसे विक्रमादित्यजी के समय से प्राप्त हुआ है। विक्रमादित्यजी के पहिले का कोई इतिहास लिपिबद्ध नहीं प्राप्त होता जो अयोध्या जी की रूपरेखाका कुछ समाचार हमें बतलाये।

श्रीअयोध्याजी में अन्य मतोंकी भांति बौद्ध तथा जैनमत वालोंका भी प्रेम बड़ा सराहनीय रहा है। जिसके फल-स्वरूप उस समय यहाँ बौद्धों तथा जैनियोंके अनेक विहार तथा तपो-भूमियां बन गई थीं। जैनोंके कुल २४ तीर्थंकर हैं, इन सभी तीर्थंकरोंमें से २२ तीर्थंकर इक्ष्वाकु-वंशीय क्षत्रीय थे। उनमें से ५ तीर्थंकरोंकी जन्मभूमि अयोध्या ही है, जिनके नाम नीचे दिये जाते हैं:—

१—आदिनाथ का मन्दिर, स्वर्गद्वार में।
२—अजितनाथ का मन्दिर सप्तसागर के पश्चिम।
३—अभिनन्दनाथ का मन्दिर सराय के पास।
४—सुमन्तनाथ का मन्दिर, रामकोट
५—अनन्तनाथ का मन्दिर, गोलाघाट।

सब मन्दिरोंमें तीर्थंकरोंके चरण-चिह्न बने हैं। इन सबमें आदिनाथ जी सर्वप्रथम तीर्थंकर हैं, जो अयोध्या के राजा थे।

यहाँ के बौद्ध सन्तों में गदाधर पण्डित; पारिभद्र जी; आर्य्यशूर, अश्वघोष जो, आनन्दवसु जी हीरामणि जी तथा विशाखा जी बहुत प्रसिद्ध हैं।

बौद्धमत का तो अब कोई प्रकट स्थान अवशिष्ट नहीं है, पर जैनियों के अभी १४ स्थान सुरक्षित है जिनमें ऋषभदेव जी या आदिनाथजीका स्थान, सायर माताजीका स्थान और चरण पादुका अत्यन्त प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहां पर श्री धर्मविजयजी कन्दर्पकेतुजी, तिमुक्तओझाजी, नोमिभद्रमणि आदि सिद्ध महात्माओंने बहुत दिन तक अयोध्यावास करके सिद्धि प्राप्त किया है। पश्चात् जब यहाँ मुसलमानों का शासन हुआ, तब उन्होंने भी इसका आदर किया, यद्यपि संस्कृति पर कुछ आघात तो अवश्य पहुँचा पर मुसलमानों ने इसकी महिमा वैसो ही समझी जैसी हिन्दू समझते आये थे। इनमें भी अनेक सन्त और सिद्ध हुये जिनका नाम सन्तों में लिखा जा चुका है। मुसलमानी राजत्वकाल ही में यहाँ पर वैरागियों का अधिकार होगया था। स्थान २ पर सनातन धर्म की रक्षा के हेतु विरक्त स्थानों के अखाड़े और छावनियां बन गई थीं। वास्तव में उस समय श्रीअवध की रक्षा और उद्धार का श्रेय वैरागियों को ही प्राप्त है।

वैरागियों के अखाड़े संख्या में सात हैं, जिनके नाम-दिगम्बर, निर्वाणी, निर्मोही; खाकी (तपस्वी), निरावलम्बी, सन्तोषी और महानिर्वाणी है। इस अखाड़ोंके अतिरिक्त और भी बहुतसे विरक्तोंके स्थान है, जिनमें अभ्यागतों को भोजन प्रदान किया जाता है,इन अभ्यागतों स्थानोंमें श्रीरघुनाथदासजी

की छावनी, श्रीमणिरामजीकी छावनी तथा तपस्वीजीकी छावनी और मौनीजीकी कुटी प्रसिद्ध है। इन साधुओं के कुछ स्थानोंका विवरण भी यहाँ दिया जाता है:—

बाबा रघुनाथदासजीकी छावनी—स्टेशनसे दो फर्लांग पूर्व है। बाबा रघुनाथदासजी एक बहुत ही प्रसिद्ध सिद्ध महात्मा हुए हैं, यह उन्हींकी गद्दी है। आधुनिक छावनीके पूर्व एक फर्लांग पर उक्त सन्तजीकी प्राचीन गद्दी है, जो पहले श्रीसरयूजीकी गोद में चली गई यह एक सिद्ध पृष्ठ है जो इष्टप्रद है। यहाँ अभ्यगतों को भोजन मिलता है। सन्ध्या-समय रामायण भवन में तुलसी कृत-रामायणकी बड़ी मनोहर कथा होती है।

तपस्वीजीकी छावनी—हनुमानगढ़ीसे पूर्व जानेवाली सड़क पर आधे मील की दूरी पर है। यहां भी साधुओं की बड़ी सेवा होती है।

मधुकरनिवास—जानकीघाट पर पण्डित श्रीरामवल्लभा शरणजी के निवास स्थान को मधुकर निवास कहते हैं, यहां भी साधुसेवा होती है; रामनामका नित्य कीर्तन होता। यहां एक पाठशाला भी है। भारत के प्रसिद्ध सन्त श्री पं० रामपदारथ दासजी वेदान्ती वर्तमान स्थानाधीश हैं।

चरणपादुका—तपस्वीजीकी छावनी जानेवाली सड़क पर दाहिने हाथ वाटिका चबूतरे पर है श्रीरामचन्द्रजीके चरणों के चिन्ह बने हैं। होली, विजयादशमी, रंगभरी एकादशी का श्रीहनुमानजी का निशान बड़े समारोहके साथ यहां आता है।

भगवानदासआचारीका मन्दिर—यह स्थान दन्तधावन कुण्डके उत्तर है। यहांके अध्यक्षने सातों अखाड़ोंको अयोध्याजी में प्रतिष्ठित होंनेमें सहायता की थी।

यज्ञवेदी—सीताकुण्ड पर यज्ञवेदी नामका श्रीरामानुजीय आचारियोंका एक प्राचीन स्थान है। कहते हैं कि इस स्थानको दाक्षिणात्य ब्राह्मणोंने अपने विद्याबल से उत्तरार्द्धी ब्राह्मणों को शास्त्रार्थ में पराजित करके स्थापित किया था।

वर्तमान समय में यज्ञवेदीके अधिकारीगण कई वंशों में विभक्त होगये हैं। प्रधान यज्ञवेदी के आधे भागके स्वामी रामचन्द्राचार्यजी हैं और आधेके स्वामी श्री रंगाचार्य हैं, श्री शेषाचार्य तथा कृष्णाचार्य श्रीस्वामी बीरराघवाचार्यजी पूर्व फाटक यज्ञवेदी के अध्यक्ष हैं; और एक विद्वान् पुरुष हैं।

मन्दिर स्वामीनारायण छपिया—यह स्वामी नारायण सम्प्रदाय का मन्दिर है। स्टेशनके पूर्वमें है मन्दिर बड़ा सुन्दर एवं रमणीक है। गुजरात प्रान्तके यात्री प्रायः यहीं ठहरते हैं क्योंकि यहां उन्हें अधिक सुविधा प्राप्त होती है।

रानूपाली—यह एक उदासी सम्प्रदाय वालोंका स्थान है यहां के पूर्व महान्त श्रीबाबा माधवरामजी एक पहुँचे हुये फकीर तथा सिद्ध थे यहां एक संस्कृत पाठशाला है। अहाते के अन्दर गुरुसागर नामक एक पक्का तालाब भी है जिस पर गुरुपर्वको मेला लगता है।

मौनीजीका मन्दिर—नयेघाट पर सड़क के पश्चिम मौनी जीका मन्दिर है। यहींपर श्रीस्वामी रामानन्दाचार्यजीने अपनी शंखध्वनिसे असंख्य धर्मभ्रष्ट हिन्दुओंका उद्धार किया था।

गुरुसदन विहारी—तुलसी उद्यान के सामने जगत्प्रसिद्ध विद्यामार्तण्ड वैकुण्ठवासी पं० उमापति त्रिपाठीजीका स्थान है। श्री पं० उमापति त्रिपाठी को गुरु वशिष्ठ का अवतार माना जाता है। आज भी इस वंश में बड़े बड़े कर्मनिष्ठ एवं सुयोग्य विद्वान् हैं।

बनादासजीका स्थान—तुलसी उद्यानके पश्चिम सन्त-कवि बाबा बनादासजीका स्थान है। कहा जाता है कि आपके आशीर्वाद से महाराजा प्रतापनारायणसिंहजीको मेहनौना का राज्य मिला था अब यह स्थान उनके वंशज श्रीयुत डाक्टर भगवती प्रसाद सिंह ऐम० ए० पी० ऐच० डी०; डी० लिटके अधिकारी हैं। उन्होंने इसका जीर्णोद्धार कराया है।

सिद्धिगिरिका मठिया—नयेघाट पर रूपकला कुञ्ज के पूर्व सिद्धिगिरि की मठिया है। यह सन्यासियों का प्रसिद्ध स्थान है।

रूपकलाकुञ्ज—यह 'रूपकला कुञ्ज' नामक श्रीसीताराम-शरण भगवानप्रसाद श्रीरूपकलाजीका मन्दिर है। श्रीरूपकलाजी एक अनुरागी रसिक महात्मा हुये हैं, जिन्होंने विहारियों में भगवद्भक्तिका अच्छा प्रचार किया। रूपकला संकीर्तन समाजके आपही संस्थापक थे। यहाँ नित्य संकीर्तन होता है। रूपकलाघाट

को श्रीमहाराजा साहब अमावां ने बनवाकर यात्रियों का बड़ा उपकार किया है।

दिव्यकलाकुञ्ज—रूपकलाकुञ्जके पास ही श्रीरूपकलाजीके शिष्य श्रीरामपूजादासजींने दिव्यकलाकुञ्जका निर्माण कराया है। यहां सन्त भक्त सेवा सुन्दर होती है।

सरयू मन्दिर—नागेश्वरनाथके पश्चिम सरयू मन्दिर है। जिसमें सरयूजीकी प्रतिमा स्थापित है, यहां कीर्तन होता है और पर्वों पर झांकी तथा आरती बड़ी सुन्दर होती है।

चतुर्भुजीका स्थान—बढ़ईघाट पर चतुर्भुजी सम्प्रदायके आचार्य्य महात्मा चतुर्भुजी का स्थान है, कहते हैं कि साधुओं को प्रसाद परसते समय महात्मा चतुर्भुजीकी लँगोटी खुल गई, जिसे सम्हालने के लिये दो भुजायें और निकल आई थीं जो पीछे लुप्त होगईं।

लक्ष्मणकिला—प्रसिद्ध रसावेशी-सिद्ध-महात्मा स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी का वह निवास-स्थान है। उनके पट्टशिष्य पण्डितवर स्वामी श्रीजानकीवरशरणजी भी यही हुये हैं। ये युगल महात्मा ऐसे उदाराशय सन्त हुये हैं जो भेदभाव रहित सभीं मत सम्प्रदायों के पोषक थे। क्वार के महीने में यहां बड़ी सुन्दर रामलीला होती थी।

पलटूदास—द्विविद जी के टीले पर प्रसिद्ध सन्त पलटू

दासजी का स्थान है; इसमें पलटूसाहबकी समाधि बनी है और उनके रचे सब ग्रन्थ रक्खे हैं।

अचारी बलराम-स्वामीका मन्दिर—मत्तगयन्दके वायव्य कोण पर बलराम स्वामीका मन्दिर है, जो विजयराघव मन्दिर के नामसे प्रसिद्ध है। वहाँ एक पाठशाला भी है। स्थानकी ओर से विद्यार्थियोंके भोजन तथा विद्याध्ययन के हेतु पूरी सहायता दी जाती है।

दक्षिणी मन्दिर—गोलाघाट पर सड़क के पूर्व आचारियों का एक बहुत बडा मन्दिर है। दोनों नवरात्र में यहाँ से एक बहुत बडी बारात ९ दिन तक निकलती है।

अशर्फीभवन—(रामनिवासभवन) कटरा की सडक के दक्षिण रामानुजीय सम्प्रदाय के स्तम्भ पुरुषार्थभूषण श्रीयुत स्वामी मधुसूदनाचार्यजी महाराज द्वारा निर्मित अशर्फीभवन है। इसे अशर्फीभवन इस कारण कहते हैं कि जब इस स्थान की नींव खोदी जारही थी तो काले पत्थर की नांदमें भरी अशर्फियां मिली थीं। उसीमें से कुछ अशर्फी विराजमान भगवान राम-जानकी के आभूषण रूपमे पहनाया गया है। स्थान में नित्य साधु ब्राह्मण विद्यार्थी तथा विद्वानों की सेवा होती है। श्रावण में झूलनोत्सव बडा मनोहर होता है। यहां एक संस्कृत विद्या-लय भी है।

श्रीरामायणभवन—शृंगारहाट से पश्चिम की ओर एक फर्लांग दूरी पर कटरा जानेवाली सडकके उत्तर पटरी पर एक

बड़ा सुन्दर और महत्वपूर्ण रामायण भवन बन रहा है। इस भवन में दीवारों पर संगमर्मर के पत्थर पर सम्पूर्ण तुलसी कृत रामचरित मानस खुदवाकर लगवाया गया है। कालान्तर के लिये तथा भावी शताब्दियों के लिये एक अभूत पूर्व पुरातत्व एवं सांस्कृतिक स्मारक प्रस्तुत किया गया है। यात्रियों के लिए एक विशेष आकर्षण एवं दर्शन की सामग्री है।

श्रीमद्‌भागवत भवन—श्री रामायण भवन की स्पर्धा एवं प्रतियोगिता में उसी के पूर्व बगल में भागवत भवन नामक एक दिव्य दर्शनीय भवन बन रहा है। इसमें भी समग्र श्रीमद्‌भागवत संगमर्मर पर खुदवा कर दीवारों पर लगवाया जारहा है। विद्वानों तथा संस्कृत प्रेमियों के लिये अवश्य प्रेक्षणीय है।

तुलसीउद्यान—प्राचीन विक्टोरिया पार्कमें से विक्टोरिया की मूर्ति हटाकर उस स्थान पर श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी की मूर्ति स्थापित की गई है। अब यह तुलसी उद्यान कहलाता है। इसका प्रबन्ध भारत सरकार के हाथ में है।

—:*:—

अयोध्यामें महाराजाओंकी कृतियां

-:०:-

श्रीअयोध्याजीके उद्धारमें यहांके शाकद्वीपीय महाराजाओं का बहुत कुछ हाथ है। वास्तव में महाराजा प्रतापनारायणजीने अयोध्याजीका एक दर्शनीय रूप बना दिया है, और अनेक मन्दिरोंका निर्माण कराकर इसकी शोभा में वृद्धि कर दी है।

महाराजा साहब अयोध्या के बनवाये हुये मन्दिरोंमें दर्शनेश्वर-महादेव, राधा-माधव; राजराजेश्वर-महादेव जो राजसदन के अन्दर ही हैं विशेष दर्शनीय हैं। इसके अतिरिक्त राजद्वार का मन्दिर श्रीहनुमानगढ़ी के सामने उत्तर में है। राधा-वृजराज जो नयेघाट की सड़क पर स्थित है और गङ्गा-महल जो स्वर्गद्वार पर नागेश्वरनाथघाट के पश्चिम है देखना चाहिये।

महाराजा अयोध्याके अतिरिक्त और बहुत से महाराजा की भी अयोध्याजीमें अनेक सुन्दर कृतियां हैं। जिनमें श्रीसवाई महेन्द्र ओरछा (टीकमगढ़), महाराजा साहब अमावां, श्रीसवाई महाराजा साहब बिजावर, राजा साहब सुरसर, राजा साहब रूसी तथा नवीनगर की विशेष उल्लेखनीय हैं।

कनकभवन—ओरछानरेशका जीर्णोद्धार किया हुआ कनकभवन प्रसिद्ध है।

भुवनेश्वरी-भवन—महाराजा अमावांका-भुवनेश्वरी-भवन भीबिस्तृत एवं दर्शनीय हैं। जब यह महल बन रहा था, तब एक ऊँचे टीले के नीचे एक सुरङ्ग मिला जो कुछ दूर तक खोदे जानेके बाद राजासाहबकी आज्ञासे बन्द करादिया गया है। इस सुरङ्गमें हवनकी सामग्री तथा चावल आदि मिले थे। कहा जाता है कि यह सुरङ्ग यहांसे लखनऊ तक गया हुआ है। यहाँ पर इस समय श्रीठाकुर भगवान सिंह जी प्रबन्धक हैं जो बड़ी कुशलता तथा सहृदयतासे प्रबन्ध करते हैं।

(अमावां मन्दिर)

एक विशेष बात यह है कि यहाँ राजाओंके जो विशिष्ट मन्दिर अथवा भवन हैं उनके निर्माणमें उनकी रानियोंकी श्रद्धा ही मुख्य कारण हुई है।

कमियार का मन्दिर—चन्द्रहरिनाथ-महादेव के पश्चिम में है यहाँ ठाकुर जीको हुक्का भी पिलाया जाता है।

शीशमहल—शृङ्गारहाट के उत्तर सड़कके पश्चिम पटरी पर है। बहूबेगम ने बाबा शीतलगिरिके निवासके हेतु इसे बनवाया था अब यह एक रईस कायस्थ के अधिकार में है।

भीखूमलका मन्दिर—राधाब्रजराजके निकट सड़क के पश्चिम ओर राजा मोतीचन्द के पूर्वज भीखूमल का मन्दिर है। यहां अयोध्या की नगर-कांग्रेस कमेटी का दफ्तर भी रहता था। सार्वजनिक विराट सभायें प्रायः यहीं हुआ करती थी। मेलों में स्काउटों का दफ्तर भी यहीं रहता है।

काञ्चन भवन—महाराजा विजावर ने ऋणमोचनघाट पर एक विशाल एवं पुष्ट मन्दिर बनवाया है इसकी स्थिति श्री सरयूजी के निकट बड़ी रमणीक मालूम होती है।

भगवदाचार्य स्मारकसदन—शृङ्गारहाट से कटरा जाने वाली सड़क पर स्वामी श्रीभगवदाचार्य स्मारक सदन है। अयोध्यामें यह स्थान है जहां कोई भी सार्वजनिक सभा, भाषण व्याख्यान या उत्सव मनाया जा सकता है। इसमें वाचनालय तथा पुस्तकालय भी है।

आनन्दभवन—रामकोटमें आनन्दभवन नामक एक परम दर्शनीय मन्दिर है इसमें भगवान रामके बाल्यभाव की उपासना का दृश्य है। महाराज दशरथ अपने मन्त्रियों सहित विराजमान प्रतिष्ठित हैं। कागभुशुण्डजी का भी दर्शन होता है। स्थान के प्राचीन हो जाने पर उसके अध्यक्ष श्रीयुत पं० रामसुन्दरजी पाठक अपने धन से इसका जीर्णोद्धार कराया है और अपनी ओर से भगवान के सुचारु-भोगराग के लिये सम्पत्ति अर्पित की है और निरीक्षण के लिये ट्रस्ट कर दिया है।

झुनझुनियाँ बाबा का मन्दिर—ऋणमोचनघाटके समीप ही श्रीझुनझुनियां बाबा का एक विशाल मन्दिर बना है। स्थान के सामने सरयूजीमें घाट भी बनवाने की योजना है। मन्दिर का निर्माण बड़ी श्रद्धाभक्ति से किया गया है यह रसिक भावा-विष्ट सन्त स्थान है।

अमावां मन्दिर—रामकोट में महाराजा अमावां की कोठी और मन्दिर है। अमावां मन्दिर बड़ा प्रसिद्ध दार्शनिक केन्द्र है। मन्दिर में लगभग बीस दर्शनीय स्थान हैं जिनमे सभी प्रकार के इष्टदेवोंकी मूर्तियां हैं। शैव वैष्णव शाक्त सबकी आराधना पूजा तथा भावना का विचार करके मूर्तियां प्रतिष्ठित की गई हैं। वर्तमान समयके लब्धख्याति सिद्ध सन्तोंकी भी मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। इस एकही मन्दिरमें दर्शन करके अनेक दर्शनीय देवताओं का दर्शन मिल जाता है।

पुरानी गद्दी—रघुनाथदासजी महाराज की तपोभूमि मांझामें है जो पुरानी गद्दी कहलाती है। यहाँ जाकर दर्शन करने से आत्मा को तत्काल सुखशान्ति प्राप्ति होती है यह सिद्ध स्थल नगर में एक तपोभूमि का आदर्श प्रस्तुत करता है।

उत्तर तोताद्रिमठ—इसके आदि संस्थापक श्रीवल्लभद्राचार्यजी थे। वर्तमान महान्त श्रीयुत स्वामी सुदर्शनाचारीजी हैं जो एक परम विद्वान तथा रामानुजीय परमपरा के सिद्ध सन्त हैं। यहां मठमें उत्तराधिकारी श्रीमहान्त स्वामी श्रीरामानुजाचार्यजी हैं जो बड़े विद्यानुरागी एवं उत्साही तथा सम्प्रदायके भक्तहैं श्रीस्वामीवल्लभद्राचार्यजीका प्राचीन स्थान पहिले वासुदेवघाट पर था। सरयूजीने इसे अपनी धारामें लेलिया तब स्वामीजीको स्वप्नमें प्रेरणा हुईकि रामकोटमें वेंकटेश भगवानकी प्रतिमा एक टीलेके नीचे पड़ी है उसका उद्धार करके वही मठ निर्माण होना

चाहिये। अतः अताउल्लाह बेग से वह टीला खरीदा गया और प्रतिमा का उद्धार हुआ।

इस स्थानमें श्रीनिवासबोधायन रामानुज संस्कृत महाविद्यालयहै।

कौसलेशसदन—केकयीघाटके मार्ग पर श्रीरामायणाचार्य का एक रामानुजीय स्थान है।

खटला—हनुमानकुण्ड पर श्रीस्वामी हयग्रीवजी त्रिदण्डी ने रामानुजीय सम्प्रदायके सिद्धान्तोंके अध्ययन करनेवाले छात्रों के लिये बनवाया था। आज भी वहाँ छात्र निवास करत हैं।

खाकचौक—रामानन्दीय वैष्णव मात्र की रक्षा के लिये त्यागी खालसा तपस्वियोंके तेरहभाई हैं। खाकचौक उन सबका केन्द्र स्थान हैं। यहाँ के श्रीमहान्त यमुनादासजी हैं। स्थान में साधुसेवा होती है।

श्यामासदन—श्रीरामघाट रोड पर मांझामें श्यामासदन रसिक सिद्ध सन्तों का एक प्रधान केन्द्र नया बना है।

हनुमानबाग—वासुदेव घाट पर एक रमणीक साधुसेवी स्थान है। पं० रामपदारथदासजी वेदान्ती इसके प्रमुख स्थानाध्यक्ष हैं। यहां नित्य अखण्ड कीर्तन हुआ करता है।

वेदन्त।आश्रम—मातगेड़ रोड पर वेदान्त आश्रम नामका एक स्थान है जिसे रामानुजीय प्रसिद्ध विद्वान श्रीयुत प०कौशलेन्द्र प्रपन्नाचार्यजीने निर्माण किया है।

मौनीजीका स्थान–श्रीरघुनाथदासजीके शिष्य भजनानन्दी सन्त श्री मौनी जी का स्थान रामघाट पर है। यहां सन्तों की निस्वार्थ सेवा होती है।

शीतल अमराई—परिक्रमा मार्ग पर रघुनाथदासजी के शिष्य मौनीजीकी तपोभूमि एक टीले पर है। यहां रामनाम का भजन करके मौनीजीको आत्मशान्ति प्राप्ति हुई है।

वाल्मीकीयभवन–श्रीमणीरामजी की छावनीके वर्तमान श्रीमहान्त श्रीनृत्यगोपालदासजीने अपने तत्वावधानमें एक दिव्य योजना बनाई है जिसमें वाल्मीकीय श्लोकों को संगमर्मर पर खुदवाकर लगवाने का प्रबन्ध किया है।

श्रावणकुञ्ज—नयेघाटसे वासुदेवघाट जानेवाले मार्ग पर श्रावणकुञ्ज है यहाँ तुलसीकृत रामायण की बडी प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तक रक्खी है।

वैकुण्ठमण्डप—रघुनाथदास मार्ग (रायगंज) पर श्री स्वामीवैकुण्ठाचार्यने एक रामानुजीय स्थान बनवाया है यहां साधु सेवा होती है।

वेदभवन–रघुनाथदास मार्ग पर श्री पं० परमेश्वरदत्त त्रिपाठी का वेद भवन है जहां वेदपाठ की शिक्षा दी जाती है।

मानसभवन—जन्मभूमि पर मानसभवन बनवाने का

एक जोयना कार्यान्वित हो रही है। इस प्रयासमें श्री राधेश्याम मारवाड़ी का उद्योग सराहनीय है।

ऋषभदेव—(जैनी मन्दिर) बरगदही बाग के दक्षिण जैन सम्प्रदाय के सामूहिक प्रयत्न तथा उत्साह के फलस्वरूप एक बड़ी भारी अक्षय कीर्तिका केन्द्र स्थापित किया गया है। यह जैन धर्मके आदि-ब्रह्मा श्रीस्वामी ऋषभदेवजीकी ३२ फुट ऊँची पत्थरकी एक खड़ी प्रतिमाकी सन् १९६५ में स्थापना हुई है। यह स्थान एक विशाल रमणीक अहाते के भीतर है जिसमें एक उद्यान भी है। यहां जैन मतके अन्य अनेक इष्ट देवताओं की मूर्तियों की प्रतिष्ठा करनेकी योजना है। यह दिगम्बर जैनियों का प्रमुख केन्द्र है।

१. टिकारी राज्य मन्दिर, प्रमोदवन में रसिकनिवास के नाम से प्रसिद्ध है।
२. फूलपुर स्टेटका पत्थर का मन्दिर, नयेघाटके पास में है।
३. राजा हरिभानदत्त गोंडाराज्यका मन्दिर, स्वर्गद्वार पर है।
४. राजेन्द्रनिवास, नामक एक नवीन दर्शनीय महन्त श्रीहनुमत निवास के पास बना है।
५. मनकापुरका मन्दिर, मीरापुरमें वासुदवघाटके निकट है।
६. तिलोईराज्यका मन्दिर, कटरा में है।
७. बम्बई की सेठानीका मन्दिर स्वर्गद्वार में है।
८. ओयल और महेवा राज्य का मन्दिर स्वर्णखनि कुण्ड पर रायगञ्ज में है।

९. रूसी मन्दिर एवं पाठशाला नयेघाट पर है।
१०. सुरसर का मन्दिर वासुदेवघाट पर है।
११. पायर तथा बौंड़ी राज्य का मन्दिर, लक्ष्मणघाट ।
१२. पालीका मन्दिर, तुलसी उद्यान के पश्चिम।
१३. रामनगर धमेड़ी का मन्दिर, प्रमोदवन ।
१४. सीढ़ीपुर का मन्दिर, रामघाट निर्मोही बाजार में।
१५. राना का मन्दिर, श्रृङ्गारहाट में।
१६. बाघीका मन्दिर, मातगेड़की सड़क पर बाये हाथ पर।
१७. जगदीशपुर का मन्दिर, मातगेड़ की सड़क पर।
१८. खजुरहट का मन्दिर, श्रृङ्गारहाट के पश्चिम।
१९. अष्टभुजाप्रसाद का मन्दिर, श्रृङ्गारहाट के पश्चिम।
२०. सूर्य्यपुर बहरेला का मन्दिर, नवीनगर मन्दिरके पूर्व।
२१. सुन्दरसदन, हनुमानगढ़ीसे जन्मस्थान जानेवाली सड़क के दाहिने हाथ एक रमणीक मन्दिर है। इसके अन्दर पत्थर का मन्दिर राधा बृजराज के नामसे प्रसिद्ध है।
२२. राजीवलोचन आचारी का मन्दिर, श्रृङ्गारहाट में।

बगदरस्टेटका मन्दिर—दतुअनकुण्ड पर। प्रयागपुर तथा जगदीशपुर स्टेटका मन्दिर रामकोटमें। ओनईराज्यकेदीवानका मन्दिर रायगंजमें, कविराजलछिराम भट्ट का मदिर नौगजीपर।

अयोध्यावासी वैश्य पंचायती मन्दिर—श्रीरामजानकीका मन्दिर नजरबागमें बड़ा विशाल और रमणीक है। इसमें दस हजार यात्री विश्राम ले सकते हैं। जातिपांति का भेदभाव नहीं

माना जाता । इसे प्राचीन अयोध्यावासी वैश्योंने अपनी जातीयताके स्मरणार्थ तथा उद्धारार्थ निर्मित कराया है । ये कौशल गोत्र के वैश्य हैं । मन्दिर का प्रबन्ध एक कमेटी करती है । श्री पाटेश्वरीप्रसादजी उसके वर्तमान प्रबन्धक हैं जो बड़े उत्साही हैं।

अयोध्या के पर्वोत्सव

१—श्रीरामनौमी—चैत्र शुक्ला नवमी को सरयू स्नान का पर्व है । नगर के समस्त देवालयों में रामजन्मोत्सव होता है। लगभग ५ लाख यात्री प्रतिवर्ष आते हैं ।

२—श्रीजानकीनवमी—वैशाख शुक्ला नवमीको सीताकुण्ड में स्नानका पर्व है; अनेक देवालयों में विशेषकर जानकीघाट स्थान; गोलाघाट, रूपलकाकुञ्ज; दिव्यकलाकुञ्ज, लक्ष्मणकिला आदि रसिक सम्प्रदायक स्थानों में जन्मोत्सव होता है ।

३—श्रीरामानुजजयन्ती—चैत्र वैशाखमें मेषपर जब सूर्यकी संक्रान्ति होंती है और उसमें अद्रा नक्षत्र का योग होता है तब मनाई जाती है, श्रीरामानुज की सवारी निकलती है ।

४—अषाढ़ शुक्ला द्वितीया को रथयात्रा उत्सव होता है प्रत्येक मन्दिर से भगवान के अर्चा विग्रह को विमानों पर विठा कर सवारी निकाल कर रामघाट तक जाते हैं, सायंकाल का दृश्य बड़ा सुहावना होता है ।

५—श्री हनुयानगढ़ी में अषाढ़ मास के किसी मङ्गलवार को फूलबँगला की झांकी होती है।

६—आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी को सद्गुरु श्री पं० रामवल्लभाशरण जी की जयन्ती को उत्सव जानकीघाट में मनाया जाता है।

७—श्रावण शुक्ला तृतीया को मणिपर्वत का मेला होता है। दोपहर के बाद प्रत्येक मन्दिरसे भगवानकी मूर्तियां विमानों पर सवारी के रूप में मणिपर्वत के उपवन में आती हैं। यहां झूलनोत्सव होता है।

८—श्रावण शुक्ला पञ्चिमी (नाग पञ्चमी) को लक्ष्मण घाट सहस्रधारा पर प्रातःकाल स्नान का पर्व है। राजसदन में बड़ा सुन्दर उत्सव होता है।

९—तुलसीजयन्ती-श्रीतुलसीचौरा, तुलसीउद्यान पर विशेष रूप से उत्सव होता है जिसमें व्याख्यान प्रवचन तथा तुलसी साहित्य पर प्रकाश डाला जाता है।

१०—श्रावणझूला श्रावण शुक्ल पक्ष भर नगर के समस्त देवालयों में झूलनोत्सव होता है। अनेक स्थानों में संगीत तथा नृत्य के कलाकार भी आते हैं।

११—श्रीफक्कीरे रामजी के मन्दिर में समस्त सावन झूलनोत्सव होता है।

१२—अयोध्याराजकी ओरसे श्रावण झूलनोत्सवके अवसर

पर एकादशीसे पूर्णिमा तक पांच दिन राजसदनके भीतरी प्रांगण श्रृङ्गारवन में बड़ी रमणीक झांकी होती है। इस झांकी का साहित्यिक महत्व भी है।

१३-श्रावणपूर्णिमाको श्रीअशर्फी भवन में संगीत तथा नृत्य सम्मेलन होता।

१४-जन्माष्टमी-समस्त मन्दिरों में कृष्ण जन्मोत्सव मनाया जाता है। फैजाबाद और अयोध्या दोनों नगरों में उत्सव की धूम रहती है फैजाबाद में सेठ साहूकार अपने अपने घरों पर झूलनोत्सव की झांकी में विविध प्रकार के दृश्य प्रस्तुत करते हैं। फैजाबाद पुलीसलाइन और कारागार में भी ज़न्मोत्सव होता है।

१५-अयोध्याके रायगञ्ज मुहल्लेमें अष्टमी से चतुर्दशी तक अनेक प्रकार के पौराणिक कथाओं के दृश्यों की बड़ी रमणीक झांकियाँ सजाई जाती हैं। इस कार्य में स्थानीय हलवाई बन्धुओं का बड़ा प्रयास सराहनीय है।

१६-कुशात्पाटिनी-अमावस्या भादों की अमावस्या को सरयू तथा तिलोदकी के संगम पर स्नान का पर्व है। लोग इसी दिन कुश खोदकर यहाँ से ले जाते हैं।

१७-कज्लीतीजि-भादौं की शुक्ल तीज को सुन्दरी भवानी (डिग्रीकालेजके सामने) पर मेला लगता है जिसमें कुश्ती दङ्गल होता है।

१८—ऋषिपञ्चमी भाद्रपदकी शुक्लापञ्चमीको वशिष्ठकुण्ड पर ऋषिपञ्चमीका पर्वोत्सव मनाया जाता है। इस पर्वोत्सवमें विशेष कर सस्कृतके बिद्वान विद्यार्थीगण तथा साधु सन्त ही भाग लेते हैं। संस्कृत भाषा में शास्त्रार्थ करते हुये छात्रों का दृश्य दर्शनीय होता है।

१९—सूर्यषष्ठी भादोंको अजोंरी छठको सूर्यकुण्ड पर सूर्य जन्मोत्सवके उपलक्ष्यमें स्नानका पर्व है, मेला लगता है।

२०—सूर्यकुण्डका मेला प्रत्येक रविवारको और भादोंके महीनेके अन्तिम रविवारको विशेष रूपसे सूर्यकुण्डका प्रसिद्ध मेला लगता है स्नानका पर्व है दूर २ से दुकाने आती हैं। जिसमें गृहस्थीमें काम आनेवाली वस्तुयें विकती हैं, खेती के औज़ार लकड़ीके सामान अच्छे मिलते हैं।

इसी प्रकार पोष महीनेमें भी सूर्यकुण्डका दूसरा मेला लगता है।

२१—जलविहार एकादशी रसिकभावनाके संत भादोंकी शुक्ला एकादशीको भगवान रामलक्ष्मण, जानकी को सरयू की धारामें नाव पर बिठाकर रात भर जलविहार की झाँकी करते हैं।

२२—अनन्तचौदसअयोध्यासे लगभग ६मील पश्चिम रायपुर में एक कच्चे तालावमें मेला होता है। इस अवसर पर एक बहुत बड़ी बाजार लगती है जिसमें लकड़ी लोहे के सामानों

तथा बर्तनों की दुकाने बड़ी दूर-दूर से आती हैं। खेतीके सामानों की बिक्री होती है।

रामलीला—श्रीप्रताप-धर्मसेतु अयोध्या-राज्य के प्रबन्धसे राज्यद्वार पर पितृपक्ष नवमीसे कारको द्वादशी तक श्रीरामलीला होतीं है; जिसमें श्रीरामजीके बनवास से लेकर राजगदी तक के सब चरित्र बड़ी सुन्दरतासे दिखाये जाते हैं। इसमें लङ्कादहन तथा लक्ष्मणशक्तिकी लींला दर्शनीय होतो है। राजद्वारके अतिरिक्त भगवदाचार्य स्मारक सदनमें तथा स्वर्गद्वार लक्ष्मणकिला पर भी रामलीला होती है।

पितृपक्षको झांकी—पितृपक्षमें महाराजा अयोध्या के राजसदनमें तथा उनके राधावृजराज में सांझीकी झांकी होती है। इसके साथही नवरात्रमें नव दिन भगवती दुर्गाके बिभिन्न रूपों की सुन्दर झांकी होता है। इन झांकियोंमें महिम मर्दिनी की झांकी बड़ी प्रशंसनीय होती है, जो अष्टमीको होती है।

भरतमिलाप—रामलीलाके ही सिलसिलेमें श्रीहनुमानगढ़ीके सामने भरतमिलापका उत्सव बड़े सज धज से होताहैं। इसी समय शृङ्गारहाटमें अयोध्या राज की ओर से भी भरत मिलाप डे़ब धूमधाम से होता हैं।

राजगदी—रामलीलाकी अन्तिम दिनकी लीला राजगद्दी के रूपमें होती हैं। राजासाहब के प्रबन्ध से राजगदी का सुन्दर उत्सव होता हैं।

शेषशायीकी झांकी या जलविहार— शरद पूर्णिमाकी रात्रि में दन्तधावन कुण्ड के जलपर यह झांकी बनाईजाती है। इसका दृश्य बड़ा मनोहर होता है। इस उत्सव में स्थानीय हलवाइयों का प्रबन्ध रहता है।

श्रीहनुमज्जयन्ती— कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को हनुमानगढ़ी पर श्री हनुमज्जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई जाती है। रातभर हनुमानगढ़ी पर नाच गाने तथा कीर्तन भजन हुआ करते हैं। कार्तिक कृष्णा पञ्चमी से ही हनुमानजी के सामने रामायण पाठ, तथा भजनप्रवचन होता है।

परिक्रमा:—

अयोध्यातीर्थ की तीन प्रकार की परिक्रमा तीन अवसरोंपर होती है। प्रथम परिक्रमा चौरासी कोसकी, दूसरी चौदह कोसकी, तीसरी पांच कोसकी। इसके अतिरिक्त एक चौथी परिक्रमा है जिसको अन्तर्गृही परिक्रमा कहतेहैं यह नित्य की जाती है।

प्रथम परिक्रमा (अक्षय-नवमी)— कार्तिक शुक्ला नवमी को श्री अयोध्यापुरीकी चौदहकोसी परिक्रमा होती है। प्रायः लोग स्वर्गद्वार घाट से प्रारम्भ करते हैं। किन्तु यहपरिक्रमा अयोध्या के किसी भी स्थान से प्रारम्भकी जाती है, और उसी स्थान पर आकर पूर्ण की जाती है। जनता नेसरकार से प्रार्थना कियाकि चौदहकोसी परिक्रमाकामार्ग बनवा दिया जाय। सरकार इस ओर उन्मुख भी हुईऔर कुछ लिखा पढ़ी होने लगी किन्तु अभी तक उसका कार्यप्रकाश में नहीं आया है। परिक्रमा जाते समय निम्नलिखितस्थान मार्ग में मिलते हैं:—

श्री सरयूतटके सम्पूर्ण घाट, श्रीमहाराज बाबा रघुनाथदास जी की प्राचीन गद्दी, श्रीमौनीजीका स्थानशीतलअमराई वैतरणी-कुण्ड, सूर्य्यकुण्ड, आचारीका धपापकुण्ड, कुसुमायुधकुण्ड (कुश-माहा ग्राम), जनौरा फैजाबादकी सिविल लाइन्स, निर्मलीकुण्ड, गुप्तार घाट, (गोप्रतारघाट) यमस्थल, रामललाघाट, चक्रतीर्थ। पांचकोसकीपरिक्रमा—(एकादशी) स्वर्गद्वार के सब घाट:नयाघाट, जानकीघाट; रामघाट. रघुनाथदासजीकी छावनी मौनीजीकीकुटी शीतलअमराई सरयूबाग. खर्जुकुण्ड. मणिपर्वत. दुर्भरसर.दशरथ कुण्ड. कौशल्याकुण्ड. जालपादेवी का मन्दिर. महताब बाग प्रह्लादघाट. चक्रतीर्थ राजघाट आदि स्थानमिलते हैं।

इसके अतिरिक्त सबसे छोटी परिक्रमा श्री अयोध्या नगर की है, जो प्रतिदिन होती है। इसमें लोग वशिष्टकुण्डसे प्रारम्भ करते हैं, स्वर्गद्वारघाट, नयाघाट, जानकीघाट, रामघाट से पच्छिम को मुड़कर तपस्वीजीकी छावनी से होते हुये दन्तधावन कुण्ड (दतून कुण्ड) पर पहुँचते हैं, वहां सेहनुमानगढ़ी के दक्षिण होकर श्रीवशिष्ठकुण्ड पर समाप्त करतेहैं।

चौरासीकोस की परिक्रमा— चैत्र-शुक्ला रामनवमी से चैत्र पूर्णिमा तक के भीतर किसी भी दिन प्रारम्भ की जाती है। प्रथम विश्राम स्थान मनोरमा पर होता है, जो अयोध्या से उत्तर गोंडा जिले में है। इस दिन यहां लोग भौरी भांटा खाकर विश्राम करते हैं। नीचे शेष विश्राम-स्थान लिखे जाते हैं:—

१—मनोरमा

१३— पटरंगा

२—रामरेखा	१४—कमियार
३—शृंगीऋषिका आश्रम	१५—जम्बूतीर्थ
४—गोसाईंगंज	१६—वाराहक्षेत्र(संगम)
५—जैयसिंहमऊ	१७—उत्तरी भवानी
६—सूर्यकुण्ड	१८—अमदही रामघाट
७— दराबगंज	१९—गोकुलधाम
८— आस्तीकाश्रम	२०—कुटिलासंगम
९—जन्मेजयकुण्ड	२१—नवाबगंज
१०—अमानीगंज	२२—नगवा
११—मिश्रकेटरवा	२३—सिकन्दरपुर
१२—लखनीपुर	२४—मनोरमा

परिक्रमा समाप्तकरके अयोध्या में जानकी नवमी-पर्व का स्नान श्रीसीता कुण्डपर करते हैं।

तुलसी विवाह— कार्तिक शुक्ल एकादशी को दन्तधावन कुण्ड स्थान में तुलसीविवाह होता है।

कार्तिक पूर्णिमा— सरयू स्नान का पर्व है। लाखों यात्री स्नान करते हैं।

रामविवाह— मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी को रामविवाह की बारात प्रत्येक मन्दिर से बड़ी धूम धाम से निकलती है। यह अपूर्व मांगलिक समारोहबड़ा ही दर्शनीय होता है। इस अवसर पर कनकभवन में विवाह सम्बन्धी सम्पूर्ण कृत्य विधिवत सम्पादित किये जाते हैं।

बाबा रामप्रसाद का अखाड़ा में (बड़ास्थान) लक्ष्मणकिला,

वियाहुती भवन, रूपकलाकुंज, दिव्यकलाकुंज में तथा तुलसी-चोंरा पर ताड़कावध, धनुषयज्ञविवाहोत्सव तथा रामकलेवा और विदाई की लीलायें होती हैं।

रघुनाथदास जयन्ती—पौस दशमी(शुक्ल) को सिद्ध संत बाबा श्रीरघुनाथदासजीकी जयन्ती बड़े समारोह से मनाई जाती है जिसमें उनकेसहस्त्रों शिष्यों तथा भक्तों प्रेमियों का मेला होता है। दीनदुखियों को कई दिन तक भोजन वस्त्रे दान किया जाता है।

माघ स्नान— माघअमावास्या को श्री सरयू स्नानका पर्व होताहै।

वसन्त पंचमी— अयोध्या की समस्त संस्कृत पाठशालाओं में बसन्तपंचमी का त्यौहार सरस्वती जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रमके अतिरिक्त संस्कृत तथा हिन्दी भाषा का नाटक तथा सम्मेलन होता है।

शिवरात्रि— फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी को शिव जीकी बारात 'रघुपतिगुण-कीर्तन-समाज' के प्रवन्ध सेनागेश्वरनाथ मन्दिर से कुबेर टीला जन्मभूमि से, राजसदन से बड़ेसमारोह से निकलती है और इसी उपलक्षमें चार-पांच दिन नाटकभी खेलेजाते हैं।

होलिकोत्सव— अयोध्या में आदर्श होली मनायी जाती है। गन्दगी व कीचड़ का नाम नहीं रहता। कोईव्यक्ति गन्दे शब्दों का प्रयोग नहीं करता। रायगंजसे, हनुमानगढ़ी से तथा नया-घाट और स्वर्गद्वार से रामलक्ष्मण भरतशत्रुघ्नकी सवारियां निकलतीहैं जो राजसदनहोकर सरयूतक जाकर लौट जाती हैं।
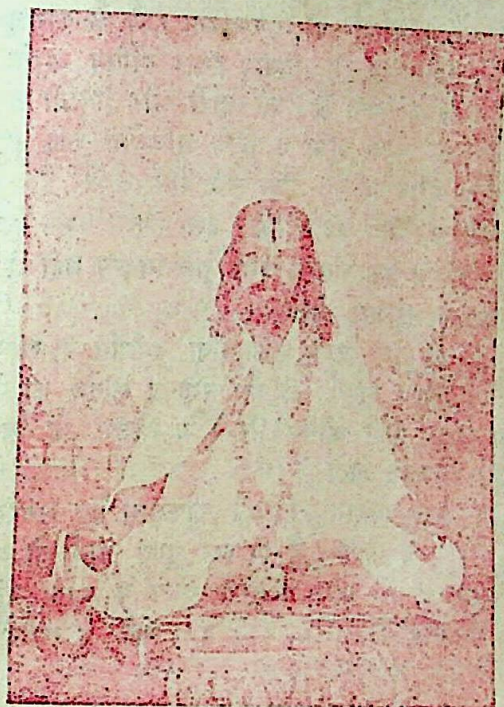
बाबा श्री रामलखन शरणजी

कीर्तन संचालक श्रीराम जन्मभूमि श्री अयोध्या जी

॥ श्री हनुमते नमः ॥

अखण्ड कीर्तन कोष

* भक्तजनों से निवेदन *

अयोध्या स्थित 'श्रीराम जन्मभूमि' हिन्दुओं का परमपावन पुण्य तीर्थ स्थान है। यहां पर यवनों और हिन्दुओं के पारस्परिक संघर्ष की सम्भावना होने के कारण प्रस्तुत स्थल को न्यायालय ने विवाद स्थल घोषित करके अपने अधिकार में ले लिया है। फौजदारी और दीवानी के न्यायालयों में इस पुण्य भूमि के लिये अभियोग चल रहा है। इस पुण्य भूमि पर २७ दिसम्बर सन् १९४९ ई० से दिन रात अखण्ड कीर्तन हो रहा है। इस कीर्तन करने का संकल्प यह है कि जब तक श्रीराम जन्म भूमि स्वतन्त्र नहीं हो जायेगी तब तक यह चलता रहेगा।

श्री राम जन्म भूमि सेवा समिति के संरक्षण में बाबा रामलखन शरण जी इस अखण्ड कीर्तन को चला रहे हैं इस समय बीस कीर्तनकारियों के भोजन के लिये प्रति मास ६०० व्यय होता है।

उक्त महान कार्य की सफलता हेतु समस्त हिन्दू समाज का यह कर्तव्य है कि इस पुण्य कार्य को यथाशक्ति दान देकर चलायें और अक्षुण्य पुण्य के भागी बनें। जो सज्जन अखण्ड कीर्तन में दान देना चाहें वे रसीद अवश्य प्राप्त करें।

सहायता भेजने का पताः—	निवेदकः—
संचालक	१—शकुन्तला नायर
बाबा रामलखन शरण	सदस्य लोकसभा
अखण्ड श्रीसीताराम नाम	लोरपुर हाउस, फैजाबाद
संकीर्तन कोष	२—ठाकुर गुरुदत्त सिंह
श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या जी	भू० पू० सिटी मजिस्ट्रेट
जिला—फैजाबाद (यू॰ पी॰)	फैजाबाद

जगदीश प्रिंटिंग प्रेस, प्रमोदवन अयोध्या

सायंकाल में एक स्थान पर सब लोग होली मिलते हैं।

आठौंकामेला– प्रधान मेला वड़ीदेवकाली पर होता है।

बुढ़वा मंगल-- मत्तगजेन्द्र पर होली के बाद मंगल के दिन सायकाल में होता है।

कथामण्डप तथा व्याख्यानमंच

वड़ी छावनी-- रघुनाथदासजी को वड़ी छावती रायगंज (वरहटा) में रामायण भवन नामक कथा मण्डप है जहां भारत के ख्याति प्राप्त रामायणी गोलोक वासी श्री महात्मा रामायणी रामवालक दासजी रामचरितमानस की कथा कहते थे। अब श्री पं० रामस्वरूपदासजी रामायणी मानस की कथा कहते हैं। कथा का समय सायं ५ वजे।

छोटी छावनी--वैष्णवदासजी की छावनी जानकी घाट में में एक प्राचीन कथा मण्डप है। यहां भारत के ख्यात विद्वान श्री पण्डत रामवल्लभाशरण जी महाराज अनेक वेद वेदाङ्ग तथा शास्त्र पुराणों की कथा कहते थे। उनके पश्चात श्री पं० सीताराम शरण जी ने कुछ दिन तक उस परम्परा का निर्वाह किया। अब भी यहां नित्य ५ वजे सायंकाल कथा प्रवचन करते होता हैं।

तपसीजी जी की छावनी का कथा मण्डप (रामघाट) यहां विशेष अवसरों पर रामचरित मानस की कथा होती है।

श्री अखिलेश्वर दासजी का कथा मण्डप (रामघाटमार्ग)

पर है। यहां नित्य सायंकाल में विविध पुराणों तथा रामायणों की कथा होती है।

तुलसीचौरा– सायंकाल ७बजे से रामचरित मानस की कथा होती है। प्रायः रामचरित मानस के अध्ययनशील रामायणी श्री तुलसी चौरा पर रामचरित मानस की कथा अवश्य कहते हैं।

जन्मभूमि कथामण्डप– नित्य सायंकाल समय कथा होती है।

फकीरेरामजी का स्थान– यहां भी सायंकाल में रामायण की कथा होती है।

श्री लक्ष्मण किला– श्रीमान् पं० सीताराम शरणजी महाराज ने स्वयं कथा का प्रबन्ध किया है। यहां नित्य सायंकाल में कथा तथा कीर्तन प्रवचन होता रहता है।

जानकीघाट पर मधुकरिया– श्री जानकी शरणजी नित्य कथा प्रवचन करते हैं।

भारत के ख्याति प्राप्त विद्वान अनेक रामायणियों के पूज्य वयोवृद्ध सन्त श्री पं० रामसुन्दर दासजी महाराज श्री मणिराम जी की छावनी में रामायण की नित्य कथा कहते हैं।

कनकभवन– श्री पं० चन्द्रकला शरणजी भक्तमाली कथा प्रवचन करते हैं।

युगलमाधुरी कुञ्ज– नजरबाग में है। यहां श्री मैथिलीशरण जी नित्य कथा कहते हैं।

शृङ्गारहाट राजसदन में कार्तिक मास में रामायण की एक बड़ी मनोहर कथा होती है।

प्राय: सब प्रकार की सार्वजनिक सभायें शृङ्गारहाट में राजा साहब के फाटक के सामने होती रही है। अब श्री भगवदाचार्य स्मारक सदन में व्यवस्थित व्याख्यान मंच बन गया है जिसमें सार्वजनिक सभाओं के आयोजन की बड़ी सुविधा हो गई है।

राजनैतिक जागृति

नगर में नगर काङ्ग्रेस कमेटी का प्राचीन संगठन है। हिंदू महासभा के संगठनकाकार्यालय है। जनसङ्घ तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक कार्यकर्ताओं का कार्यालय है। कुछ दिन पहिले रामराज्य परिषद् की बड़ी धूमधाम थी।

अयोध्या के सरोवर तथा जीर्णोद्धार

१- भरतकुण्ड राज्य सरकारकी योजना द्वारा
२- सूर्यकुण्ड अयोध्याराज्य
३- दन्तधावनकुण्ड महाराज डुमराव
४- हनुमानकुण्ड
५- स्वर्णखनिकुण्ड महाराज महेवा
६- विभीषणकुण्ड नैपाल की महारानी
७- अग्निकुण्ड
८- विद्याकुण्ड
९- वशिष्ठकुण्ड
१०- गुरुसागर महान्तरानूपाली

नीचे उन कुण्डों का नाम लिखाजाता है जिनकी दशा शोचनीय है। राज्य सरकार नगर पालिका तथा श्रद्धालु सेठ साहूकारों को चाहिए कि वे इनके जीर्णोद्धार की कीर्ति प्राप्त करें।

(१) सीताकुण्ड (२) सुग्रीवकुण्ड बरादही बाग के पूर्व

जिसका पत्थर हटा लिया गया है (३) अञ्जनीकुण्ड (४) वृहस्पति कुण्ड (५) उर्वशीकुण्ड (६) गणेशकुण्ड (७) शुक्रकुण्ड (८) वासुकी कुण्ड (९) धनयत्तकुण्ड (१०) दुर्भर कुण्ड (११) महाभरसर (१२) दशरथकुण्ड (१३) कौशल्याकुण्ड (१४) सप्तसागर (१५) क्षीरसागर।

टीले– प्राचीनकाल में ये टीले प्रधान रक्षकों के सेनास्थल थे। अब खंडहर हो गये।

कुवेरटीला— जन्मभूमि के नैऋत्यकोण पर है। इस्ट इन्डिया कम्पनी ने इसके नीचे की सम्पति को खुदवाना शुरू किया था। किन्तु विषैले हड्डों से पराजित होकर खुदाई वन्द करा दिया।

सुग्रीवटीला– हनुमानगढ़ी के दक्षिण है। उसके दक्षिण नल नील और अंगद ठीला है।

धर्मशालायें विश्रामगृह तथा पंडों के लाजिंग

राजकीय पर्यटनकेन्द्र— अयोध्या स्टेशन के सन्निकट है। अयोध्यातीर्थ की ऐतिहासिक महत्ता की खोज में देश विदेश के यात्री आते रहते हैं। भारत सरकार ने इन्हीं पर्यटकोंकी सुविधा के लिये यह पर्यटक केन्द्र (टूरिस्ट सेंटर) स्थापित। इसमें २७ कमरे हैं। दो प्रथम श्रेणी के दो शय्या वाले हैं जिसका शुल्क ३-५० प्रति कमरा है। १० शय्या वाले दो कमरे हैं जिसमें १ रुपया प्रति शय्या किराया है। १८ कमरे ऐसे हैं जिनमें एक एक शय्या है जो दो रुपया प्रति कमरा दिये जाते हैं।

रिजर्वेशन अग्रिम किराया लेकर एक सप्ताह पहिले पर्यटक

अधिकारी करते हैं। केन्द्र में सुन्दर उद्यान हैं। इसका फोन नं० २६ है।

रेलवे विश्राम गृह— तीन कमरे हैं। प्रत्येक में दो शय्यायें हैं। एक शय्या का दो रुपया २४ घन्टे के लिये शुल्क है। स्टेशनमास्टर अयोध्या के अधिकार में है।

लाजिंगहाउस— पण्डा लोग अपने यात्रियों के ठहरने के लिए लाजिंग हाउस का लाइसेंस रखते हैं, लगभग ५० लाजिंग हाउस यहां हैं।

१- विड़ला धर्मशाला- भारत में प्रसिद्ध सेठ विड़ला ने क्षीरसागर के निकट एक भव्यधर्मशाला सं० २०२२ में निर्मित कराया। धर्मशाला में भोजनालय इत्यादि की हर प्रकार की सुख सुविधा का प्रवन्ध है। एक सुन्दर उद्यान है। कई सौ यात्रियों के ठहरने का स्थान है। बिजली का पङ्खा लेने पर ७५ पैसा प्रतिदिन किराया लगता है। वारातों के ठहरने के लिये भी आज्ञा मिलती है। टेलीफोन की भी सुविधा है।

२- कन्हैया प्रसाद की धर्मशाला रायगञ्ज में स्टेशन के पूर्व है। इसमें अव डिग्रीकालेज का छात्रावास है।

३- वच्चू वावू (रूसी) की धर्मशाला रायगञ्ज में।

४- वनारसी पण्डा की धर्मशाला स्टेशन के पूर्व।

५- तिवराइन की धर्मशाला स्टेशन के पूर्व।

६- सत्यनामी कोटवा की धर्मशाला स्टेशन के पूर्व।

७- छंगामलकी धर्मशाला स्टेशन के पूर्व

८- ओनई के मैनेजर की धर्मशाला स्टेशन के पूर्व
९- डिप्टी महादेव प्रसाद की धर्मशाला रायगंज
१०- जैनियों की धर्मशाला दरगदही बाग ऋषभदेव स्मारक
११- हरीसिंह धर्मशाला नयाघाट
१२- बम्बई की सेठानी की धर्मशाला स्वर्गद्वार
१३- भावनगरर की " "
१४- लखनऊ " "
१५- शिवनारायण सेठ " "
१६- विन्ध्यवासिनी " "
१७- सूरजमल " "
१८- गंगाबाई " "
१९- ढेडराज " वासुदेवघाट
२०- रामरूप अग्रवाल " रानूपाली
२१ मोहनलाल की " क्षीरेश्वर
२२- जैनधर्मशाला " कटरा
२३- चित्रगुप्त " वासुदेवघाट
२४- श्री कनक भवन के अहाते में एक सेठ के धन से एक बड़ी दिव्य धर्मशाला का निर्माण हो गया है।

अयोध्या में व्यवसायिक दृष्टिकोणः—

प्राचीन काल में यहां निमक तथा सूत का व्यवसाय होता था और नाव चलाने वाले रोजगारी रहते थे नोनहटी, सुनहटी और जलयानपुर मुहल्लों के नाम इसी आधार पर पड़े थे।

अभी थोड़े दिन पहले सन् १९२५ तक रायगञ्ज और कटरा कनीगञ्ज में फूल के बर्तन बनानेवाले कारीगर भारत भर में

प्रसिद्ध थे ।

अब यहां कण्ठी, माला, चन्दनपासा, रोरी, श्री और गमछे की अच्छी बिक्री होती है। योगियाना में खजूर की चटाइयां और पंखे बनते हैं और बाहर भेजे जाते हैं।

संस्कृत साहित्य तथा धार्मिक पुस्तकों के बड़े बड़े विक्रेताओं की दूकानें हैं।

राज्य सरकार ने रानूपाली में हरिजन औद्योगिक आस्थान खोला है। जिसमें १९६५ से प्लास्टिक के तथा लकड़ी के खिलौने बनने लगे हैं।

प्रशासन:—

अयोध्या फैजाबाद नगर पालिका के अन्तर्गत है नगर में जलकल को स्वतन्त्र व्यवस्था है। एक कोतवाली (थाना) है जिसमें प्रधान और दो तीन सहायक थानेदार रहते हैं। ६ पुलिस चौकियां (रायगंज नयाघाट, लक्ष्मणघाट, टेढ़ीबाजार, जन्मभूमि तथा कटरा) है।

सरकार ने गुप्तारघाट से रामघाट तक मछली मारना अपराध घोषित किया है। मेलों का प्रबन्ध अब राज्य सरकार करती है। मेलों में अयोध्या आने वाले यात्रियों को छूत की बीमारी से बचने के लिये टीका लगाना अनिवार्य है।

अयोध्या आने वाले यात्रियों से यात्राकर लगता है जो टिकट के साथ ले लिया जाता है।

पोस्टआफिस:— शृङ्गारहाट में एक पोस्टआफिस और तार घर है। यहां हिन्दी में तार देने की व्यवस्था है यहां से

ट्रङ्काल और लोकल टेलीफोन कर सकते हैं।

सिटीवस:— अयोध्या से फैजाबाद तक आने जाने केलिये सिटीवस की व्यवस्था है।

नागयात्रा— ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी को शेषजी (मणिपर्वत) केस्थान से आधी रात में तक्षक जाति के लालरङ्ग के नागों की सवारी निकलती है जिसमें नागराज मणिधर सर्पों के वने सिंहासन पर सवार होकर आकाशमार्ग से लक्ष्मणकुण्ड सरयू जी तकजाते हैं। नागपञ्चिमी को हस्त अथवा शतभिष् नक्षत्र मङ्गलवार पड़ने पर भी यही नागयात्रा निकलती है।

रामनवमी वृक्ष— महात्मा बालक रामविनायक वशिष्टकुण्ड ने इसका दर्शन करके अपनी डायरी में लिखा था कि अशोक-वन में मणिपर्वत और सीताकुण्ड के बीच रामनामी श्याम वृक्ष है। जिसके छोटे छोटे पत्तों की आनन्द प्रद छाया है, मीठे पौष्टिक फल हैं, इन्द्रीवर के समान फूल है। राजरोग की औषधि है। छाया में वैठने से मूर्ख विद्वान हो जाता है। वल्कल छील कर देखने से उसमें रामनाम की लिपि देख पड़ती है।

शिक्षाकेन्द्र

अयोध्या की चौदहकोस की परिक्रमा के भीतर फैजाबाद नगर भी आ जाता है, किन्तु यहां की पांच कोस की परिक्रमा के भीतर आनेवाले शिक्षा केन्द्रों का ही नाम दिया जाता है।

आई० टी० कालेज (औद्योगिक प्रशिक्षणकेन्द्र) अयोध्या की पञ्चकोसी परिक्रमा की सीमा पर फैजाबाद रोड की उत्तरी पटरी भिन्न प्रकार के उद्योगों के प्रशिक्षण के लिये राज्य सर-

कार की ओर से एक शिक्षा केन्द्र है।

कामताप्रसाद सुन्दरलाल साकेत महाविद्यालय— यह डिग्रीकालेज फैजाबाद से अयोध्या आने वाले राजमार्ग पर है। इसकी स्थापना में त्यागमूर्ति समर्थ बाबा राघवदास जी तथा प० परमेश्वर नाथ सप्रू जी एडवोकेट का प्रयास रहा है। अयोध्या के महाराज जगदम्बिका प्रताप नारायण सिंहजी ने अपनी लाखों की जमींदारी सम्पत्ति अयोध्या क्षेत्र में इस डिग्रीकालेज की स्थापना में अर्पित की है। फैजाबाद के श्री बाबू महावीर प्रसादजी अग्रवाल ने एक लाख रुपया अर्पित करके अपने पूज्य पितृव्य तथा पिता के नाम के साथ इसका नाम संलग्न कराया है। यहां हिन्दी संस्कृत; मनोविज्ञान, राजनीति, इतिहास, अर्थशास्त्र, भूगोल, समाजशास्त्र, सैन्यविज्ञान गणित, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान एल० एल० बी, बी० एड० आदि विषयों की डिग्री कक्षाओं तक शिक्षा दी जाती है।

महाराजा हायर सेकण्ड्री स्कूल— प्राचीन हिन्दी इङ्गलिश स्कूल को अपनी सम्पत्ति अर्पित करके महाराजा श्री जगदम्बिका प्रताप नारायण सिंहजी ने महाराजा हायर सेकण्ड्री स्कूल के नाम से सञ्चालित किया है।

तुलसी कन्या पाठशाला— स्वर्गद्वार के निकट एक कन्या पाठशाला जिसे कमलारानी ने अपने धन से सञ्चालित किया है जिसमें इंटरमीडियट तक शिक्षा के प्रबन्ध की योजना है।

कन्या जूनियर हाईस्कूल नगरपालिका द्वारा संचालित है।

नगर पालिका की ओर से बालकों को प्रायमरी तक की शिक्षा के लिये रानूपाली, रामकोट, बाग बिजेसर. कटरा, स्वर्गद्वार नयाघाट, जानकीघाट शृङ्गारहाट तथा रायगंज मोहल्लों में कुल नौ प्रायमरी स्कूल हैं ।.

इसी प्रकार कन्याओं के लिये कटरा कजियाना, स्वर्गद्वार शृङ्गारहाट, रायगंज और कनीगंज में कन्या पाठशालाएं ।

संस्कृत पाठशालायें

काशी के बाद संस्कृत विद्याकी शिक्षा के लिये अयोध्या के इस प्रदेश में द्वितीय स्थान है। अयोध्या में दीक्षित संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान काशी में भी शीर्षस्थ पूजे गये हैं और भारत भर में कीर्ति प्राप्त की है। संस्कृत का प्रसिद्ध कवि 'अश्वघोष साकेतक' यहीं का निवासी और छात्र रहा। वर्तमान युग के महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने संस्कृत भाषाकी शिक्षा यहीं प्राप्त की है संस्कृत भाषा सम्बन्धी अनुसन्धान करने वाले विदेश के छात्र अयोध्या में ही अपना समाधान पाते हैं।

वर्तमान समय में यहां लगभग २५ संस्कृत की पाठशालायें हैं। नीचे कुछ प्रमुख संस्कृत पाठशालाओं का विवरण दिया जा रहा है।

१- श्रीराजगोपाल संस्कृत महाविद्यालय—अयोध्या की सर्व प्रमुख प्राचीन संस्कृत पाठशाला है। यहां वेद, व्याकरण न्याय, साहित्य, मीमांसा, ज्योतिष, वेदान्त, दर्शन; तथा अन्य समस्त आधुनिक विषयों के साथ आचार्य परीक्षा तक शिक्षा

दी जाती है। छात्रों के लिये छात्रावास की सुविधा है। छात्रवृत्ति तथा भोजन की व्यवस्थाहै। पाठशाला अध्यक्ष पूज्य श्री महान्त रामानुज दास जी स्वयं एक महान उत्साही विद्याव्यसनी महापुरुषहैं जो पाठशालाके उत्थानमें लगेथे, का स्वर्गवास होगया।

२—ब्राह्मण वैदिक विद्यालय—सूरयूबाग में बाबू गुरुचरण लाल उपाध्यायने स्थापित किया था। यहां पर न्याय, वेदान्त, व्याकरण साहित्य आदि विषयों की आचार्य परीक्षा तक शिक्षा दी जाती है। छात्रवृत्ति दी जाती है। पाठशाला के सञ्चालक गोलोकवासी श्री पं० श्री निवास जी उपाध्याय एम० ए० एल० एल० बी० आनरेरी मजिस्ट्रेटके पुत्र श्रीगङ्गा प्रसादजी उपाध्याय हैं।

३—श्रीबालमुकुन्द महादेशिक विद्यालय—स्वर्गद्वार में न्याय, व्याकरण, वेदान्त, साहित्य, वेद, ज्योतिष तथा आयुर्वेद की शिक्षा आचार्य परीक्षा तक दी जाती है। छात्रोंको छात्रवृति दी जाती है। इसका व्यय श्रद्धेय धनपति सेठ मगनीराम बांगड़ के पुत्र श्री गोविन्दलाल बांगड़ कलकत्ता, स्वयं वहन करते हैं।

वर्तमान समय में श्रीयुत ब्रह्मानन्द जी इसके प्रबन्धक हैं। जो एक परम सहृदय योग्य विद्याव्यसनी व्यक्ति हैं।

४—हनुमत संस्कृत महाविद्यालय—हनुमानगढ़ी की ओरसे स्थापित है जिसमें समस्त विषयों की आचार्य परीक्षा तक की शिक्षा दी जाती है तथा छात्रों को छात्रवृत्ति मिलती है।

५-गुरुकुल महाविद्यालय-जाल्पा देवी के समीप त्याग मूर्ति स्वामी त्यागानन्द जी के प्रयास से आर्य समाज द्वारा संस्थापित है। यहां संस्कृत भाषा के समस्त विषयों की आचार्य परीक्षा तक शिक्षा दी जाती है। गुरुकुलीय परिपाटी से छात्र यहीं निवास करके अध्ययन करते हैं।

६—अनादि ब्रह्म विद्यालय—अशर्फी भवन कटरा में
७—वीर राघव भागवत विद्यालय—स्वर्गद्वार पुराना थान
८—रघुवर पाठशाला तुलसी उद्यान के पच्छिम
९—रघुनाथ संस्कृत विद्यालय—सीढ़ीपुर मन्दिर रामघाट
१०-श्रीराम संस्कृत विद्यालय—बावनजी का मन्दिर स्वर्गद्वार
११-श्री दिव्यकला संस्कृत विद्यापीठ—नयाघाट
१२-श्री गायत्री आश्रम—वशिष्ठकुण्ड
१३-श्री नारायण संस्कृत विद्यालय-रानूपाली उदासी स्थान
१४-उमापति स्मारक विद्यालय-नयाघाट
१५-वैष्णव धर्म वर्द्धिनी संस्कृत पाठशाला-बड़ा स्थान रामकोट
१६-रामचरण संस्कृत विद्यालय
१७-डेडराज बृजराज संस्कृत विद्यालय विभीषणकुण्ड
१८-सद्धर्मवर्द्धिनी पाठशाला—जानकीघाट
१९-योगिराज संस्कृत विद्यालय—रामघाट रोड
२०-रूसी की पाठशाला-नयाघाट

सार्वजनिक हित के सामाजिक सेवा स्थल

श्रीराम अस्पताल-प्राचीन रईस बाबू श्रीरामने अस्पताल बनवा कर सरकार को सौंप दिया था। एलोपैथिक चिकित्सा

की पूर्ण सुविधा है।

कालरा अस्पताल— राजकीय प्रबन्ध से सञ्चालित सुव्यवस्थित छूत की समस्त बीमारियों के रोगियों के लिये एलोपैथिक अस्पताल है।

पशु चिकित्सालय—१५ नया पैसा प्रति दिन फीस लेकर पशुओं की चिकित्सा होतीहै। राज सरकार द्वारा सञ्चालितहै।

अयोध्यामें कोई जनाना अस्पताल नहीं है। सरकार द्वारा नियुक्त मिडवाइफ और दाईयां हैं जो फीस लेकर काम करती हैं।

डाक्टर रमेन्द्रमोहन मिश्रा का दवाखाना—नयेघाट रोड पर बचा साहब श्री डाक्टर रमेन्द्रमोहन मिश्र एम० बी० बी० एस० आनर्स का एलोपैथिक चिकित्सालय है। व्यक्तिगत चिकित्सकों में आप सर्वोपरि सुयोग्य एवं सुशील हैं। यहां रोगियों के ठहरने की सुविधा प्राप्त है।

डाक्टर पञ्जाबी का दवाखाना—नयेघाट पर एलोपैथिक दवाखाना है। यहां पर डाक्टर हरीकृष्ण धवन और श्यामलाल धवन चिकित्सा करते हैं।

नारायण आश्रम—नयाघाट पर स्वामी सनकानन्द गिरि का नारायण आश्रम है। यहां एलोपैथिक तथा होमियोपैथिक दोनों ढङ्ग से निःशुल्क चिकित्सा होती है। रोगियों के ठहरनेको सुविधा है।

अग्रवाल मेडिकलहाल— रायगञ्ज में डा० शान्तिलाल अग्रवाल एल० एस० एम० एफ० चिकित्सक है।

जगदीशपुर मन्दिर—मातगैड़ रोड पर कांच, भगन्दर केस्चूला, ववासीर आदि रोगों का एक नया अस्पताल खुला है।

मेडिकल स्टोर–ऐसे स्थान जहां एलोपैथिक दवायेंविकती है निम्नलिखित है–

१–अरोड़ा का दवाखना शृङ्गारहाट अयोध्या में

आयुर्वेदिक औषधालयः—

१—श्री अवधेश औषधालय—तुलसी उद्यान के पच्छिम है। सुयोग्य विद्वान श्री पं० युगलकिशोरजी मिश्र यहां के बड़े उदार चिकित्सक हैं।

२—सञ्जीवन औषधालय—शृङ्गारहाट में विषगाचार्य श्रीमान पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल जी आयुर्वेदिक तथा यूनानी दोनो पद्धतियोंके सुयोग्य एवं कुशल चिकित्सक है।

३--भारत जीवन औषधालय--शृङ्गारहाट में डा० रामदेव मिश्र वनारस यूनीवर्सिटी के शिक्षा प्राप्त डाक्टर हैं।

४—श्रीधर औषधालय—(शृङ्गारहाट नयाघाट रोड पर) यहां पं० लक्ष्मीनारायण जी वैद्य कुशल औषधि निर्माता तथा चिकित्सक हैं।

५—प्रभाकर औषधालय— (रायगंज) आयुर्वेदरत्न पं० जगदम्बिका प्रसाद पाण्डेय यहां के योग्य चिकित्सक हैं।

६—श्री लक्ष्मी औषधालय- (मुराई टोला) चिकित्सक श्री रामलखनदास।

७—श्रीनरसिंह औधषालय—प्रमोदवन निःशुल्क औषधालयहै

८—श्री हंसनाथ औषधालय— (नयाघाट) श्री पं० हंसनाथ वैद्य है।

९—श्रीगिरजा औषधालय- राधाब्रजराज) पं० शिवकुमार जी० डी० आई० एम० एस० एक सुयोग्य आयुर्वेदीय अध्यापक एवं कुशल चिकित्सक हैं।

१०—श्री पं० विद्यासागर वी० आई० एम० एस० स्वर्गद्वार में कुशल चिकित्सक हैं।

११—श्री पं० मोहनलालजी—आयुर्वेद के अध्यापक तथा रस-प्रक्रिया के योग्य वैद्य हैं।

१२—भगवान औषधालय—अशर्फीभवन के सामने है यहां श्री पं० सम्मुखधर जी वैद्य हैं।

१३—गुरुकुल औषधालय-(जाल्पा) गुरुकुल की ओर से निःशुल्क औषधालय है।

१४—भास्कर औषधालय—रानूपाली में पं० रामचन्द्र जी वैद्य का भास्कर औषधालय है।

होमियो पैथिक चिकित्सालयः—

अवध होमियोपैथिक फार्मेसी डा० जगदीश नारायण शृङ्गारहाट
हनुमत फार्मेसी—डा० ओंकार प्रसाद शीशमहल

अशोक होमियोहाल--श्रृङ्गारहाट डा० श्यामनारायण
साकेत होमियोहाल--टेढ़ीबाजार " "

औषधि बिक्रेता:—

१--एलोपैथिक औषधि विक्रय की एक दूकान श्रृङ्गारहाट में अरोड़ा मेडिकल स्टोर के नाम से है।

२--नयाटघाटपर आयुर्वेदीय औषधियोंके विक्रय के एजेन्ट कन्हैया प्रसादकी दूकान है।

गङ्गासहाय एण्ड कम्पनी--श्रृङ्गारहाटमें औषधि विक्रेता है। बहुत प्राचीन समय से यहां का बना अमृत सुरमा सारे भारतमें प्रसिद्ध है और नेत्र रोगों के लिये बड़ा गुणकारी प्रसिद्ध है।

पाठक होमियो हाल-प्रमोदवन में है अवश्य पधारें।

काष्ठ औषधियों के प्रसिद्ध बिक्रेता पंसारी

अयोध्या के प्राचीन पंसारी श्रीपरमानन्द के वंशज श्रीछेदी लाल की दूकान श्रृङ्गारहाट में है। यहां औषधियों के नुसखोंकी दवाइयां बिकती हैं। यह एक प्रमाणिक दूकान है।

श्रृङ्गारहाट में बड़कऊ साहुकी प्राचीन दूकान है जहां औषधियों के नुसखों की वस्तुयें बिकती है।

मनोरंजन का स्थान:—

मानमन्दिर--महाराजा अयोध्या के प्रबन्ध से श्रृङ्गारहाट में एक बड़ा सुन्दर सिनेमा हाल है।

तुलसी क्लब—तुलसी चौरा पर नवयुवकों का एक वाली-वाल क्लब है।

लायब्रेरियां (पुस्तकालय) (१) मानसिंह लायब्रेरी—पहिले फैजाबाद के अजायबघर में थी अब डिग्रीकालेज के तत्वावधान में है। यह एक सुव्यवस्थित प्राचीन लायब्रेरी है।

(२) डिग्रीकालेजकी अपनी एक पृथक व्यवस्थित लायब्रेरीहै।

(३) रामकुमार दासकी लायब्रेरी मणिपर्वतके निकट पयोहारी जीं के स्थान में एक विशाल परम सुव्यवस्थित पुस्तकालय है जिसमें १५ हजार से अधिक पुस्तकें हैं। अनुसंधान की दृष्टि से बड़ी उपयोगी लायब्रेरी है।

(४) करी पुस्तकालय—राजसदन में अयोध्या राज द्वारा स्थापित प्राचीन ग्रन्थों का पुस्तकालय है।

(५) श्रीरामानन्द पुस्तकालय—भगवदाचार्य स्मारक सदनमें है

(६) कनकभवन पुस्तकालय

(७) श्री सत्य समाज पुस्कालय तथा वाचनालय—शीशमहल

(८) श्रीतुलसी पुस्तकालय तथा वाचनालय रंगमहल रामकोट

(९) श्री भारत साधु समाज वाचनालय—शृङ्गारहाट

(१०) श्री हनुमत पुस्तकालय हनुमानगढ़ी

(११) राजगोपाल संस्कृत महाविद्यालय में एक सुन्दर पुस्तकालय है।

अखाड़े—अयोध्या अखाड़ों के लिये प्रसिद्ध है। यहां के पहलवान भारत में विख्यात हैं। अनेक अखाड़ों में श्री हनुमान

और और निर्निर्मोही का अखाड़ा सर्वमान्य अखाड़ा है।

अयोध्या के प्रेस और पत्रकारिताः—

अयोध्या में हनुमत प्रेस, विरक्त प्रिंटिंग प्रेस, ब्रह्मदेव प्रेस श्री सीताराम प्रेस तथा जगदीश प्रिंटिंग प्रेस, है जिनमें सुन्दर छपाई होती है।

यहां से विरक्त साप्ताहिक तथा संस्कृत साकेत दो साप्ताहिक पत्र निकलते हैं। अवध सन्देश और संस्कृतम् दो मासिक पत्र निकलते हैं। इन पत्रों के सम्पादकों के अतिरिक्त श्री पं० राम गोपाल पाण्डेय 'शारद' श्री पं० अम्बिकेश्वर पति त्रिपाठी तथा श्री रामरक्षा त्रिपाठी 'निर्भीक' यहां के पत्रकार और लेखक हैं जो "आज", "भारत", स्वतन्त्रभारत, नवजीवन आदि पत्रों के प्रतिनिधि तथा सम्वाद दाता हैं।

अनेक जातियों के मन्दिर

१	मंदिर	धोबी वंश	रायगंज,	१३	मंदिर	मुराव वंश	टेढ़ीबाजर
२	,,	ठठेर वंश		१४	,,	खटिक ,,	मुराईटोला
३	,,	बढ़ई ,,	,,	१५	,,	कुम्हार ,,	,,
४	,,	सोनार ,,	,,	१६	,,	गड़ेरिया ,,	रामकोट
५	,,	कुर्मी ,,	,,	१७	,,	कहार ,,	कटरारोड
६	,,	रैदास ,	,,	१८	,,	भूज ,,	,,
७	,,	हलवाई ,,	,,	१९	,,	तेली ,,	,,
८	,,	पासी ,,	,,	२०	,,	कोहार ,,	स्वर्गद्वार
९	,,	नाऊ ,,	,,	२१	,,	तमोली ,,	ऋणमोचन

२० ,, चमार ,, जलयानपुर २२ ,, लोहार ,, स्वर्गद्वार
२१ ,, यादव अहिर टेढ़ीबाज़ार २३ अयोध्यावासी वैश्यनजरबाग
२२ ,, केवट ,,

सिक्ख गुरुद्वारा ब्रह्मकुण्ड—यहां पर तीन गुरुद्वारे हैं। सिक्खों के आदि गुरू श्री नानकदेव जी, गुरू तेगबहादुर जी तथा श्री गुरू गोविन्द सिंह जी आदि सिक्ख गुरू यहां पधार चुके हैं जिनके चबूतरे बने हैं। महान्त श्री शत्रुजीत सिंह ने सब की खोज किया और जीर्णोद्धार कराया। श्री नारायण सिंह जी वर्तमान महान्त हैं।

सदाव्रत—

बलरामपुर राज्य का सदाबर्त— नयाघाट-दोपहर में भोजन दिया जाता है।

कुलू काश्मीरी सदावर्त–स्वर्गद्वार
बाबा तुलसीदास नयाघाट के स्थान में खिचड़ी बंटती है।
महाराजा अयोध्या–दोपहर में बना हुआ भोजन दिया जाताहै।
कनकभवन—अभ्यागतों को भोजन दिया जाता है।
हनुमानगढ़ी–बनी खिचड़ी बांटी जाती है।
रानूपाली—स्थान में भोजन दिया जाता है।
बड़ी छावनी–दोपहर में पंगत के समय जो कोई भी आजाता भोजन दिया जाता है।
प्रायः प्रत्येक अभ्यागती स्थानों में दोपहर को भोजन मिलता है।

वरतन्तु आश्रम—प्राचीनकाल में कौत्समुनि के गुरु महर्षि वरतन्तुका आश्रम स्वर्णखनि कुण्डी रायगंज बरहटा में था उसके जीर्णोद्धार के निमित्त एक संस्था है। श्री पं० जवाहर लाल पाण्डेय, मुख्तार अम्म तथा जिलेदार अयोध्या राज्य उसके प्रमुख पथ प्रदर्शक हैं। इसी आश्रम के तत्वाधान में वेद वेदांग तथा अन्य विषयों की निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है।

* भजन प्रभाती *

ठुमुक चलत रामचन्द्र बाजत पैजनिया;
किलकिलाय उठत धाय; गिरत भूमि लटपटाय;
धाय मातु गोद लेत दशरथ की रनियां;
अञ्चल रज अङ्ग झार विविध भांति सों दुलारि;
तन—मन सब वार डार कहत मृदु बचनियां;
मेवा मिष्ठान हाल; भावे सो लेहु लाल;
और लेहु रुचिर पानि; कंचन झुनझुनियां;
तुलसिदास अति अनन्द; देख के मुखारविन्द;
रघुवर के छबि समान रघुवर छबि कनियां; ठुमुक

(—*)—

हमारे यहां से प्रकाशित पुस्तकों की संक्षिप्त
—: सूची :—

१-खूनी लड़की उर्फ बहादुर सेनापति चीनका जादूगर	९० पै०
२-घर संसार उर्फ वफादार भाभी	१-२५ ,,
३-जासूस लड़की उर्फ टावर सुल्तान	९० ,,
४-गरीब की पुकार उर्फ भाई-भाई	१-२५ ,,
५-इन्साफ की तलवार उर्फ बेवफा कातिल	१-२५ ,,
६-जंगल का सेर उर्फ शाही नाग	१-२५ ,,
७-घूंघट उर्फ बेदाग लड़की	१-२५ ,,
८-किस्मत का धनी उर्फ बेवफा नौकर	९० ,,
९-परदेशी का प्यार उर्फ आशिक की कुर्बानी	९० ,,
१०-निगाहों का जादू उर्फ गंगा जमुना	१-२५ ,,
११-मुहब्बत का जादू उर्फ बेगुनाह चोर	९० ,,
१२-जवानी की भूल उर्फ पाक दामन	१-२५ ,,
१३-हम्मीर हठ उर्फ अमर बलिदानी	९० ,,
१४-जालिम जमाना उर्फ प्यार और दोस्ती	९० ,,
१५-दिलावर दोस्त उर्फ बहादुर लड़की	१-२५ ,,
१६-सती चन्दन उर्फ सती सुहागन	१-२५ ,,
१७-अफलातून औरत उर्फ दगाबाज वजीर	९० ,,
१८-ज़ै जवान जै किसान उर्फ रामरहमान	१--२५ ,,
१९--अयोध्या गाइड दिग्दर्शन	२-०० ,,
२०-श्री रामजन्म भूमि का रक्तांजित इतिहास बड़ा	२-५० ,,

हर प्रकार की पुस्तकें वीं० पी० द्वारा मंगाने का पताः—

रामलखन गुप्त बुकसेलर श्रीअयोध्याजी (उ० प्र०)

नोटः-आर्डर देने के साथ पुस्तक का चौथाई मूल्य अग्रिम भेजें।

मुद्रकः- जगदीश प्रिंटिंग प्रेस, श्रीअयोध्याजी।